मार्च : 2022

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISSN 2278 - 6880
UGC Care - List Sr. No. 305

संग्रथन

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

CC-0 ...mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Fundin

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैदान के पीछे की दीवार पर लगी गोलियों के निशान।

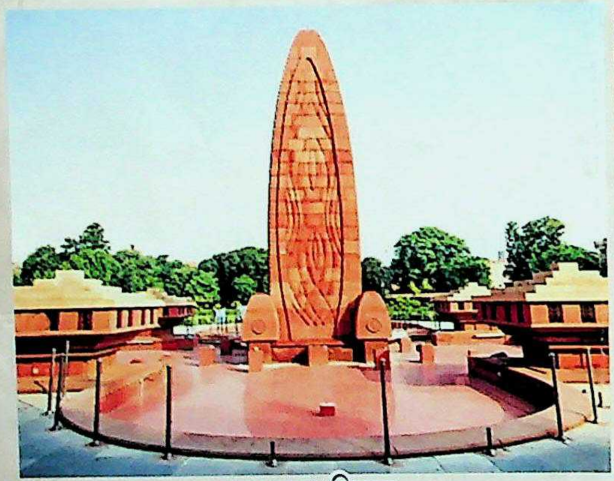

स्मारक शिला

शहीदी कुआँ

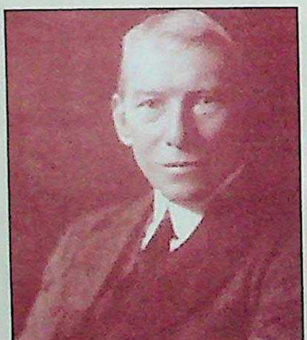

परतंत्र भारत में पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर मिकेल फ्रांसिस ओ डवायर। इनके शासनकाल में ही जालियांवाला हत्याकांड हुआ था।

रेजिनाल्ड ओ डायर जिसने निहत्थे मासूमों पर गोली चलवाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISSN 2278 - 6880
UGC Care - List Sr. No.305

संग्रथन

शब्दब्रह्मणि निष्णातः परम् ब्रह्माधिगच्छति

यू.जी.सी. से अनुमोदित हिन्दी मासिक पत्रिका

हिन्दी विद्यापीठ,
टी.सी.44/2670,जगती,
तिरुवनन्तपुरम- 695014
केरल।

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

संस्थापक संपादक :
स्व.पी.जी.वासुदेव

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4359
Dated 15.12.2023

मुख्य संपादक :
डॉ.वी.वी.विश्वम
Mob: 9446662694
sangrathan2012@gmail.com

संपादकः
डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन
Mob: 9447657301
msvinayachandran61@gmail.com

Web Edition : www.sangrathan.com

वर्ष : ३४ | अंक : 3 | मार्च : 2022
मूल्य : २० रुपये मात्र
वार्षिक चन्दा : दो सौ रुपये मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : २,००० रुपये मात्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००७७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८१२७८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलाँग,मेघालय,मो:९४३६१-११८९१
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
श्री.के.जनार्दनन नायर
प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.सोफ़िया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : सरफ़रोश 'राम मोहम्मद सिंह आज़ाद' का वीर बलिदान	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (फरवरी २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
केरल के आलिम आचार्यवर प्रो.सी.जी.राजगोपाल	प्रो.हिल्डा जोसफ	14-17
कविता के नए प्रतिमान : आलोचना का ज्ञान कोष	सी.बालसुब्रह्मण्यन	18-22
तेय्यम : अनुष्ठानिक कला रूप	रोहित जैन	23-27
कवि गजानन माधव मुक्तिबोध	डॉ.जिषा.पी.	27-29
'केक' अधखिली पंखुडियों का जीवनसाक्ष्य	डॉ.जोयिस टोम	30-36
पाठकों के पत्र		36
हिन्दी भाषा का व्यावहारिक संदर्भ	डॉ.शैलजा.के.	37-40
'परिवेश : हम-तुम' में अभिव्यक्त सामाजिक संदर्भ	डॉ.मनोरमा गौतम	40-43
सूर्यबाला की कहानियों में बालमनोविज्ञान 'सिंड्रेला का स्वप्न' के विशेष संदर्भ में	पंचमी.आर.	44-46
'चन्द्रगुप्त' में अभिव्यक्त नवजागरण	डॉ.हेमा नारायणन	47-51
फुर्सत, धोखा (दो कविताएँ)	डॉ.एस.रमा उण्णित्तान	52
वापसी (मलयाळम कविता) मूल : देशमंगलम रामकृष्णन अनुवाद :	प्रो.सी.एस.श्रीकुमारी	53
प्रश्नोत्तरी	जुगनू	54

मुखचित्र - वीर बलिदानी उधम सिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संपादकीय........

सरफ़रोश 'राम मोहम्मद सिंह आज़ाद' का वीर बलिदान

अमृत महोत्सव मनाने के इस माहौल में १३ मार्च १९४० को फाँसी पर चढ़े भारत के स्वतंत्रता सेनानी राम मोहम्मद सिंह आज़ाद उर्फ़ उधम सिंह का स्मरण अगर हम न करें तो उससे ज्यादा जघन्य पाप दूसरा नहीं होगा और इस पर भारतांबा हमें कभी माफ़ी नहीं देगी। उधम सिंह का जन्म पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम नामक गाँव में २६ दिसंबर १८९९ को हुआ था। दो साल की उम्र में माँ का निधन हुआ। आठ साल के होते होते पिता भी चल बसे। उधम सिंह और उनके बड़े भाई एकदम अनाथ हो गये। एक गरीब सिख परिवार में जन्मे उन असहाय लड़कों के सामने अमृतसर के एक अनाथालय का द्वार ही खुला, जहाँ उन्हें अपने असली नाम - शेरसिंह और मुक्ता सिंह - छोड़कर नये नाम उधम सिंह और साधु सिंह स्वीकार करने पड़े। आगे चलकर सर्वधर्म समभाव के आदर्श पर उधम सिंह ने अपना नाम बदलकर 'राम मोहम्मद सिंह आज़ाद' रख लिया जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतिनिधित्व करता था। सन् १९१७ में उनके बड़े भाई मुक्तासिंह भी सुरलोक सिधारे तो उधम सिंह बिलकुल अकेले हो गये। उन्हें अनाथालय का वातावरण खटकने लगा। १९१९ में वे अनाथालय छोड़कर आज़ादी की लड़ाई में उतर पड़े। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गये तो उधमसिंह के जीवन में एक नयी गति आयी और समर्पित भाव से अंत तक जननी जन्मभूमि की चरण सेवा करते रहे।

८ मार्च १९१९ को रौलक्ट एक्ट ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किया गया था। भारत के क्रान्तिकारियों को कुचलने केलिए ही यह बनाया गया था। इसे 'काला कानून' भी कहा गया। इसके द्वारा ब्रिटिश सरकार को बिना मुकदमा चलाये किसी भी भारतीय को जेल में बंद करने का अधिकार मिलता था। महात्मा गाँधी ने इसका ज़ोरदार विरोध किया। १३ अप्रैल १९१९ को बैसाखी के दिन रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए जलियाँवाला बाग में एक सभा बुलायी गयी थी जिसमें असंख्य देशस्नेही सम्मिलित हुए थे। उधम सिंह भी उनमें एक था। पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के निकट था यह मैदान। यह एक विशाल मैदान था जिसके पीछे किले जैसे ऊँची दीवारें थीं। सामनेवाले मकानों से सटकर एक संकरा मार्ग था जिससे लोग मैदान में आते जाते थे।

बैसाखी पूरे भारत का एक प्रमुख त्योहार है जिसे पंजाब और हरियाना के किसान बड़े उत्साह से मनाते हैं। सिख समुदाय १३ अप्रैल को हर साल सामूहिक जन्म दिवस के रुप में इसे मनाते हैं। क्योंकि १३ अप्रैल १६९९ को ही गुरु गोविन्द सिंह ने 'खालसा पंथ' की स्थापना की थी। कर्फ्यू के बावजूद 'बैसाखी' मनाने के लिए चार हज़ार से ज़्यादा लोग मैदान में इकट्ठे हो गये थे।

उत्सव मनाने और सभा में भाग लेने को आये हुए लोगों की मिली-जुली भीड बाग में फैली हुई थी। सभा शुरु हुई। नेता भाषण देने लगे तो फौरन ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर ९० ब्रिटिश सिपाहियों को साथ लेकर संकरे रास्ते से अंदर आये। सभी सिपाहियों के पास भरी हुई बंदूकें! अकस्मात् गोरों की सेना को सामने देखकर नेताओं ने खतरा सूँघ लिया। सब को शांत बैठने की सलाह दी गयी।

ब्रिटिश सैनिक संकरा रास्ता रोककर खड़े हो गये और बिना चेतावनी दिये रेजिनाल्ड डायर ने निहत्थे मासूमों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। दस मिनट के अंदर-अंदर १६५० राउँड गोलियाँ चलायी गयीं। भाग निकलने का कोई रास्ता न था। हलचल में कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान के एक कोने में खोदे कुएँ में कूद पडे, कुछ लोग दीवार पर चढ़ने के असफल प्रयास में गोली के शिकार बने। सब कहीं हाहाकार मच गया। मृत्यु का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तांडव नृत्य मिनटों तक चलता रहा। कुआँ लाशों से भर गया। १२० शव उस कुएँ से ही बाद में निकाले गये थे। 'शहीदी कुआँ' नाम से वह कुआँ आज भी सुरक्षित है। शहर में कर्फ्यू था, अतः घायलों को इलाज केलिए अस्पताल पहुँचाने में भी दिक्कत हुई। सब को वहीं दम तोड़ना पड़ा।

पंडित मदनमोहन मालवीयजी के हिसाब से उस नरसंहार में १३०० बलिदानियों ने दम तोड़ दिया था। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मृतकों की संख्या १५०० है। अमृतसर के सिविल सर्जन डॉक्टर स्मिथ की राय में १८०० से अधिक मासूम लोग मारे गये थे।

उस मैदान में उपस्थित उधम सिंह इन सब डरावने दृश्यों का साक्षी था। भावावेश में आकर उन्होंने ज़मीन से मुट्ठी भर मिट्टी ले ली और मन ही मन प्रण लिया कि इसके पीछे काम करनेवाले मैकल ओ डायर को मृत्यु-लोक पहुँचाना ही उनका, आगे का जीवन-व्रत है।

१९१२ से १९१९ तक सर माइकल फ्रांसिस ओ डायर भारत में पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे। जालियाँवाला बाग में कर्नल रेजिनाल्ड डायर की कार्रवाई की उन्होंने सराहना की और उसे सही बताया। इस पर रुष्ट होकर बदला लेने को उधम सिंह उनके पीछे पड़े। मौका ताककर अफ्रीका, नैरोबी, ब्राज़ील, अमरीका जैसे देशों में वे घूमते रहे। सन् १९३४ में इस उद्यम में वे लंदन पहुँचे और एल्डर स्ट्रीट कमर्शिएल रोड पर किराये के एक मकान में रहने लगे। छः गोलियोंवाली एक रिवाल्वर खरीद ली। उचित वक्त का इंतज़ार करते रहे।

१३ मार्च १९४० को लंदन के काक्सटन हॉल में रॉयल सेंट्रल एशियन सोसाइटी की एक सभा लगी। माइकेल ओ डायर भी वक्ता थे। उधम सिंह ने एक मोटी किताब खरीद ली और उसके पन्नों को एक रिवाल्वर के आकार में काटकर उसे उसमें रखने की जगह बना ली। इस प्रकार उन्होंने अपने हथियार को छिपाकर बड़ी सुगमता से सभागार में प्रवेश कर गये। सभा के समाप्त होने पर दीवार का सहारा लेकर वे खड़े हो गये और माइकेल की छाती पर गोलियाँ दाग दीं। दो गोलियाँ उन पर लगीं और तीसरी गोली अध्यक्ष लार्ड जेटलैंड का सीना चीर गयी। माइकल का अंत वहीं हुआ, जेटलैंड बच गये। उधम सिंह ने वहाँ से बचने की कोशिश न की। वहीं उनकी गिरफ़्तारी हुई।

उधम सिंह पर मुकदमा चला। ४ जून १९४० को वे दोषी ठहराये गये। ३१ जुलाई १९४० को पेंटनविले जेल में उधम सिंह को फाँसी दी गयी।

माना जाता है कि अमृतसर का नरसंहार ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की मुख्य वजह बना। अंग्रेज़ों के इस नृशंस व्यवहार ने हज़ारों भारतीयों को देशभक्त बना दिया। पंजाब, देश की मुख्यधारा से कुछ हटकर ही चलता था, लेकिन इस घटना के प्रभाव में आकर पंजाब प्रांत स्वतंत्रता आन्दोलन में पूर्ण रूप से भाग लेता रहा। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेज़ों से प्रदत्त 'नाइट हुड' (knight hood) को वापस कर दिया। महात्मा गाँधी ने इस नरहत्या पर चिढकर १९२० में 'असयोग आन्दोलन' शुरू कर दिया।

आखिर अंग्रेज़ों को भी सालों बाद अपनी काली करतूतों पर पछतावा हुआ। १९९७ में जब महाराणी एलिज़ाबेथ भारत में आयीं, जालियाँवाला बाग की सैर की और यहाँ की स्मारक-शिला पर मृतकों को श्रद्धाँजलियाँ अर्पित कीं। २०१३ में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरान ने भी इस स्मारक का संदर्शन किया था। विज़िटर्स डायरी में उन्होंने अंकित किया कि यह 'ब्रिटिश इतिहास की एक शर्मनाक घटना थी।'

परतंत्र भारत में विदेशियों के शासन से आज़ाद होने की उत्कृष्ट इच्छा से जहाँ उधमसिंह ने सर्वधर्म समभाव से प्रेरित होकर अपने नाम को ही 'राम मोहम्मद सिंह आज़ाद' में बदल दिया था वहाँ, ताज्जुब है कि स्वतंत्र भारत में आज धर्म के नाम पर लोगों को विघटित करने का श्रम कई दिशाओं से हो रहा है, जो श्रेष्ठ भारत की संकल्पना के हित में नहीं है। देश के लिए फाँसी पर झूले वीर बलिदानी उधम सिंह को भावभीनी श्रद्धाँजलियाँ।

- *डॉ.वी.वी.विश्वम्*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मन की बात' फरवरी - २०२२

श्री नरेन्द्र मोदी

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। 'मन की बात' में फिर एक बार आप सबका स्वागत है। आज 'मन की बात' की शुरुआत हम, भारत की सफलता के ज़िक्र के साथ करेंगे। इस महीने की शुरुआत में भारत, इटली से अपनी एक बहुमूल्य धरोहर को लाने में सफल हुआ है। ये धरोहर है, अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की, हज़ार साल से भी ज्यादा पुरानी प्रतिमा। ये मूर्ति कुछ वर्ष पहले बिहार में गया जी के देवी स्थान कुंडलपुर मंदिर से चोरी हो गई थी। लेकिन अनेक प्रयासों के बाद अब भारत को ये प्रतिमा वापस मिल गई है। ऐसे ही कुछ वर्ष पहले तमिनाडु के वेल्लूर से भगवान आंजनेय्यर, हनुमान जी कि प्रतिमा चोरी हो गई थी। हनुमान जी की ये मूर्ति भी ६००-७०० साल पुरानी थी। इस महीने की शुरुआत में, ऑस्ट्रेलिया में हमें ये प्राप्त हुई, हमारे मिशन को मिल चुकी है।

साथियो, हज़ारों वर्षों के हमारे इतिहास में, देश के कोने-कोने में एक-से बढ़कर एक मूर्तियाँ हमेशा बनती रहीं, इसमें श्रद्धा भी थी सामर्थ्य भी था, कौशल्य भी था और विविधताओं से भरा हुआ था और हमारे हर मूर्तियों के इतिहास में तत्कालीन समय का प्रभाव भी नज़र आता है। ये भारत की मूर्तिकला का नायाब उदाहरण तो थीं हीं, इनसे हमारी आस्था भी जुड़ी हुई थी। लेकिन अतीत में बहुत सारी मूर्तियाँ चोरी होकर भारत से बाहर जाती रहीं। कभी इस देश में, तो कभी उस देश में ये मूर्तियाँ बेची जाती रहीं और उनके लिए वो तो सिर्फ़ कलाकृति थीं। न उनको उसके इतिहास से लेना-देना था, श्रद्धा से लेना देना था। इन मूर्तियों को वापस लाना, भारत माँ के प्रति हमारा दायित्व है। इन मूर्तियों में भारत की आत्मा का, आस्था का अंश है। इनका एक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक महत्व भी है। इस दायित्व को समझते हुए भारत ने अपने प्रयास बढ़ाए। और इसका कारण ये भी हुआ कि चोरी करने की जो प्रवृति थी, उसमें भी एक भय पैदा हुआ। जिन देशों में ये मूर्तियाँ चोरी करके ले जाई गयी थीं, अब उन्हें भी लगने लगा कि भारत के साथ रिश्तों में soft power का जो diplomatic channel होता है उसमें इसका भी बहुत बड़ा महत्व हो सकता है। क्योंकि इसके साथ भारत की भावनाएँ जुड़ी हुई हैं, भारत की श्रद्धा जुड़ी हुई है, और एक प्रकार से people to people relation में भी ये बहुत ताकत पैदा करता है। अभी आपने कुछ दिन पहले देखा होगा, काशी से चोरी हुई माँ अन्नपूर्णा देवी की प्रतिमा भी वापस लाई गई थी। ये भारत के प्रति बदल रहे वैश्विक नजरिये का ही उदाहरण है। साल २०१३ तक करीब-करीब १३ प्रतिमाएँ भारत आयी थीं। लेकिन पिछले सात साल में २०० से ज्यादा बहुमूल्य प्रतिमाओं को भारत सफलता के साथ वापस ला चुका है। अमेरिका, ब्रिटेन, हॉलैंड, फ्रांस, कनाडा, जर्मनी, सिंगापुर, ऐसे कितने ही देशों ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत की इस भावना को समझा है और मूर्तियाँ वापस लाने में हमारी मदद की है। मैं पिछले साल सितम्बर में जब अमेरिका गया था, तो वहाँ मुझे काफ़ी पुरानी-पुरानी कई सारी प्रतिमाएँ और सांस्कृतिक महत्व की अनेक चीजें प्राप्त हुईं। देश की जब कोई बहुमूल्य धरोहर वापस मिलती है तो स्वाभाविक है इतिहास में श्रद्धा रखने वाले archaeology में श्रद्धा रखने वाले, आस्था और संस्कृति के साथ जुड़े हुए लोग, और एक हिन्दुस्थानी के नाते, हम सबको संतोष मिलना बहुत स्वाभाविक है।

साथियो, भारतीय संस्कृति और अपनी धरोहर की बात करते हुए मैं आज आपको 'मन की बात' में दो लोगों से मिलवाना चाहता हूँ। इन दिनों फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर तंजानिया की दो भाई-बहन किलि पॉल और उनकी बहन नीमा ये बहुत चर्चा में हैं और मुझे पक्का भरोसा है, आपने भी उनके बारे में जरूर सुना होगा। उनके अंदर भारतीय संगीत को लेकर एक जुनून है, एक दीवानगी है और इसी वजह से वे काफी लोकप्रिय भी हैं। Lip Sync के उनके तरीके से पता चलता है कि इसके लिए वे कितनी ज़्यादा मेहनत करते हैं। हाल ही में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हमारा राष्ट्रगान 'जन गण मन' गाते हुए उनका वीडियो खूब वायरल हुआ था। कुछ दिन पहले उन्होंने लता दीदी का एक गाना गाकर उनको भी भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी थी। मैं इस अद्भुत Creativity के लिए इन दोनों भाई-बहन किलि और नीमा उनकी बहुत सराहना करता हूँ। कुछ दिन पहले तंजानिया में भारतीय दूतावास में इन्हें सम्मानित भी किया गया है। भारतीय संगीत का जादू ही कुछ ऐसा है जो सबको मोह लेता है। मुझे याद है, कुछ वर्ष पहले दुनिया के डेढ़ सौ से ज्यादा देशों के गायकों-संगीतकारों ने अपने-अपने देश में अपनी-अपनी वेशभूषा में पूज्य बापू का प्रिय, महात्मा गाँधी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन' गाने का सफल प्रयोग किया था।

आज जब भारत अपनी आज़ादी के ७५ वाँ वर्ष का महत्वपूर्ण पर्व मना रहा है, तो देशभक्ति के गीतों को लेकर भी ऐसे प्रयोग किए जा सकते हैं। जहाँ विदेशी नागरिकों को, वहाँ के प्रसिद्ध गायकों को, भारतीय देशभक्ति के गीत गाने के लिये आमंत्रित करें। इतना ही नहीं अगर तंजानिया में किलि और नीमा भारत के गीतों को इस प्रकार से Lip Sync कर सकते हैं तो क्या मेरे देश में, हमारे देश की कई भाषाओं में, कई प्रकार के गीत हैं क्या हम कोई गुजराती बच्चे तमिल गीत पर करें, कोई केरल के बच्चे असमिया गीत पर करें, कोई कन्नड़ बच्चे जम्मू- कश्मीर के गीतों पर करें। एक ऐसा माहौल बना सकते हैं हम, जिसमें 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' हम, अनुभव कर सकेंगे। इतना ही नहीं हम आजादी के अमृत महोत्सव को एक नए तरीके से ज़रूर मना सकते हैं। मैं देश के नौजवानों से आह्वान करता हूँ, आइए, कि भारतीय भाषाओं के जो popular गीत हैं उनको आप अपने तरीके से video बनाइए, बहुत popular हो जाएँगे आप। और देश की विविधताओं का, नयी पीढ़ी को परिचय होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, अभी कुछ दिन पहले ही हमने मातृभाषा-दिवस मनाया। जो विद्वान लोग हैं, वो मातृभाषा शब्द कहाँ से आया इसकी उत्पति कैसे हुई, इसे लेकर बहुत academic input दे सकते हैं। मैं तो मातृभाषा के लिए यही कहूँगा कि जैसे हमारे जीवन को हमारी माँ गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। माँ और मातृभाषा दोनों मिलकर जीवन की foundation को मजबूत बनाते हैं, चिरंजीव बनाते हैं। जैसे हम अपनी माँ को नहीं छोड़ सकते, वैसे ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी मातृभाषा को भी नहीं छोड़ सकते। मुझे बरसों पहले की एक बात याद है जब मुझे अमेरिका जाना हुआ तो अलग-अलग परिवारों में जाने का मौका मिलता था कि एक बार मेरा एक तेलुगू परिवार में जाना हुआ और मुझे एक बहुत खुशी का दृश्य वहाँ देखने को मिला। उन्होंने मुझे बताया कि हम लोगों ने परिवार में नियम बनाया है कि कितना ही काम क्यों न हो, लेकिन अगर हम शहर के बाहर नहीं हैं तो परिवार के सभी सदस्य dinner, table पर बैठकर साथ में लेंगे और दूसरा dinner की table पर compulsory हर कोई तेलुगू भाषा में ही बोलेगा। जो बच्चे वहाँ पैदा हुए थे उनके लिए भी ये नियम था। अपनी मातृभाषा के प्रति ये प्रेम देखकर इस परिवार से मैं बहुत प्रभावित हुआ था।

साथियो, आज़ादी के ७५ साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती ये है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएँ, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं, भाषा अनेक-भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएँ एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं, एक दूसरे का विकास कर रही हैं। भारत में विश्व की सबसे पुरानी भाषा तमिल है और इस बात का हर भारतीय को गर्व होना चाहिए कि दुनिया की इतनी बड़ी विरासत हमारे पास है। उसी प्रकार से जितने पुराने धर्मशास्त्र हैं उसकी अभिव्यक्ति भी हमारी संस्कृत भाषा में है। भारत के लोग करीब १२१ यानी हमें गर्व होगा १२१ प्रकार की मातृ भाषाओं से जुड़ा हैं और इनमें १४ भाषाएँ तो ऐसी हैं जो एक करोड़ से भी ज्यादा लोग रोजमर्रा की ज़िंदगी में बोलते हैं। यानी, जितनी कई यूरोपियन देशों की कुल जनसंख्या नहीं है, उससे ज्यादा लोग हमारे यहाँ अलग-अलग १४ भाषाओं से जुडे हुए हैं। साल २०१९ में हिन्दी दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे क्रमांक पर थी। इस बात का भी हर भारतीय को गर्व होना चाहिए। भाषा केवल अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं है बल्कि, भाषा, समाज की संस्कृति और विरासत को भी सहेजने का काम करती है। अपनी भाषा की विरासत को सहेजने का ऐसा ही काम सूरीनाम में सुरजन परोही जी कर रहे हैं। इस महीने की २ तारीख को वो ८४ वर्ष के हुए हैं। उनके पूर्वज भी बरसों पहले, हज़ारों श्रमिकों के साथ, रोजी-रोटी के लिए सूरीनाम गये थे। सुरजन परोही जी हिन्दी में बहुत अच्छी कविता लिखते हैं, वहाँ के राष्ट्रीय कवियों में उनका नाम लिया जाता है। यानी आज भी उनके दिल में हिन्दुस्तान धडकता है, उनके कार्यों में हिन्दुस्तानी मिट्टी की महक है। सूरीनाम के लोगों ने सुरजन परोही जी के नाम पर एक संग्रहालय भी बनाया है। मेरे लिए ये बहुत सुखद है कि साल २०१५ में मुझे उन्हें सम्मानित करने का अवसर मिला था।

साथियो, आज के दिन यानी २७ फरवरी को मराठी भाषा गौरव दिवस भी है।

"सर्व मराठी बंधु भगिनिना मराठी भाषा दिनाच्या हार्दिक शुभेच्छा।"

ये दिन मराठी कविराज विष्णु बामन शिरवाडकर जी, श्रीमान कुसुमाग्रज जी को समर्पित है। आज ही कुसुमाग्रज जी की जन्म जयंती भी है। कुसुमाग्रज जी ने मराठी में कवितायें लिखीं, अनेकों नाटक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिखे, मराठी साहित्य को नई ऊँचाई दी।

साथियो, हमारे यहाँ भाषा की अपनी खूबियाँ हैं, मातृभाषा का अपना विज्ञान है। इस विज्ञान को समझते हुए ही, राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में, स्थानीय भाषा में पढ़ाई पर ज़ोर दिया गया है। हमारे Professional courses भी स्थानीय भाषा में पढ़ाए जाएँ, इसका प्रयास हो रहा है। आज़ादी के अमृत काल में इस प्रयासों को हम सब ने मिलकर के बहुत गति देनी चाहिये, ये स्वाभिमान का काम है। मैं चाहूँगा, आप जो भी मातृभाषा बोलते हैं उसकी खूबियों के बारे में अवश्य जानें और कुछ -ना-कुछ लिखें।

साथियो, कुछ दिनों पहले मेरी मुलाकात मेरे मित्र और Kenya के पूर्व प्रधानमंत्री राइला ओडिंगा जी से हुई थी। ये मुलाकात, दिलचस्प तो थी ही लेकिन बहुत भावुक थी। हम बहुत अच्छे मित्र रहे तो खुलकर के काफ़ी बातें भी कर लेते हैं। जब हम दोनों बातें कर रहे थे तो ओडिंगा जी ने अपनी बिटिया के बारे में बताया । उनकी बेटी Rosemary को Brain Tumour हो गया था और इस वजह से उन्हें अपनी बिटिया की Surgery करानी पड़ी थी। लेकिन उसका एक दुष्परिणाम ये हुआ कि Rosemary की आँखों की रोशनी करीब-करीब चली गई, दिखाई देना ही बंद हो गया। अब आप कल्पना कर सकते हैं, उस बेटी का क्या हाल हुआ होगा और एक पिता की स्थिति का भी हम अंदाज़ लगा सकते हैं, उनकी भावनाओं को, समझ सकते हैं। उन्होंने दुनिया भर के अस्पतालों में कोई भी दुनिया का बड़ा देश ऐसा नहीं होगा, कि जहाँ उन्होंने, बेटी के इलाज के लिए, भरपूर कोशिश न की हो। दुनिया के बड़े-बड़े देश छान मारे, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली और एक प्रकार से सारी आशायें छोड़ दीं पूरे घर में एक निराशा का वातावरण बन गया। इतने में किसी ने उनको भारत में आयुर्वेद के इलाज़ के लिए आने के लिए सुझाव दिया और वो बहुत कुछ कर चुके थे, थक भी चुके थे फिर भी उनको लगा कि चलो भई एक बार try करें क्या होता है? वे भारत आये, केरला के एक आयुर्वेदिक अस्पताल में अपनी बेटी का इलाज करवाना शुरू किया। काफ़ी समय बेटी यहाँ रही। आयुर्वेद के इस इलाज का असर ये हुआ कि Rosemary की आँखों की रोशनी काफ़ी हद तक वापस लौट आई। आप कल्पना कर सकते हैं कि जैसे एक नया जीवन मिल गया और रोशनी तो Rosemary के जीवन में आई। लेकिन पूरे परिवार में एक नई रोशनी नई जिन्दगी आ गई और ओडिंगा जी इतने भावुक हो करके ये बात मुझे बता रहे थे कि उनकी इच्छा है कि भारत के आयुर्वेद का ज्ञान है विज्ञान है वो Kenya में ले जाएँ। जिस प्रकार के plants इसमें काम आते हैं उन plants की खेती करेंगे और इसका लाभ अधिक लोगों को मिले इसके लिए वो पूरा प्रयास करेंगे।

मेरे लिए ये बहुत खुशी की बात है कि हमारी धरती और परंपरा से किसी के जीवन से इतना बड़ा कष्ट दूर हुआ। ये सुन करके आपको भी खुशी होगी। कौन भारतवासी होगा जिसको इसका गर्व ना हो? हम सभी जानते हैं कि ओडिंगा जी ही नहीं बल्कि दुनिया के लाखों लोग आयुर्वेद से ऐसे ही लाभ उठा रहे हैं।

ब्रिटन के प्रिंस चार्ल्स भी आयुर्वेद के बहुत बड़े प्रशंसकों में से एक हैं। जब भी मेरी उनसे मुलाकात होती है वो आयुर्वेद का ज़िक्र ज़रूर करते हैं। उन्हें भारत के कई आयुर्वेदिक संस्थाओं की जानकारी भी है।

साथियो, पिछले सात वर्षों में देश में आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार पर बहुत ध्यान दिया गया है। आयुष मंत्रालय के गठन से चिकित्सा और स्वास्थ्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से जुड़े हमारे पारंपरिक तरीकों को लोकप्रिय बनाने के संकल्प को और मज़बूती मिली है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले कुछ समय में आयुर्वेद के क्षेत्र में भी कई नए Start-up सामने आए हैं। इसी महीने की शुरुआत में Ayush Start-up Challenge शुरु हुआ था। इस Challenge का लक्ष्य, इस क्षेत्र में काम करने वाले Start-ups को identify करके उन्हें support करना है। इस क्षेत्र में काम कर रहे युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे इस Challenge में ज़रूर हिस्सा लें।

साथियो, एक बार जब लोग मिलकर के कुछ करने की ठान लें, तो वो अद्भुत चीज़ें कर जाते हैं। समाज में कई ऐसे बड़े बदलाव हुए हैं, जिनमें जन-भागीदारी सामूहिक प्रयास इसकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। "मिशन जल थल" नाम का ऐसा ही एक जन -आंदोलन कश्मीर के श्रीनगर में चल रहा है। यह श्रीनगर की झीलों और तालाबों की साफ-सफाई और उनकी पुरानी रौनक लौटाने का एक आनोखा प्रयास है। 'मिशन जल थल' का Focus "कुशल सार" और 'गिल सार' पर है। जनभागीदारी के साथ-साथ इसमें Technology की भी बहुत मदद ली जा रही है। कहाँ-कहाँ अतिक्रमण हुआ है, कहाँ अवैध निर्माण हुआ है, इसका पता लगाने के लिए क्षेत्र का बाकायदा Survey कराया गया। इसके साथ ही Plastic Waste को हटाने और कचरे की सफाई का अभियान भी चलाया गया। मिशन के दूसरे चरण में पुराने Water Channels और झील को भरने वाले १९ झरनों को Restore करने का भी भरपूर प्रयास किया गया। इस Restoration Project के महत्व के बारे में अधिक से अधिक जागरुकता फैले इसके लिए स्थानीय लोगों और युवाओं को Water Ambassadors भी बनाया गया। अब यहाँ के स्थानीय लोग 'गिल सार लेक' में प्रवासी पक्षियों और मछलियों की संख्या बढ़ती रहे इसके लिए भी प्रयास कर रहे हैं और उसको देखकर खुश भी होते हैं। मैं इस शानदार प्रयास के लिए श्रीनगर के लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियो, आठ साल पहले देश ने जो 'स्वच्छ भारत मिशन' शुरु किया, समय के साथ उसका विस्तार भी बढ़ता गया, नए-नए innovation भी जुड़ते गए। भारत में आप कहीं पर भी जाएंगे तो पाएँगे कि हर तरफ स्वच्छता के लिए कोई न कोई प्रयास ज़रूर हो रहा है। असम के कोकराझार में ऐसे ही एक प्रयास के बारे में मुझे पता चला है। यहाँ Morning Walkers के एक समूह ने 'स्वच्छ और हरित कोकराझार' मिशन के तहत बहुत प्रशंसनीय पहल की है। इन सबने नए Flyover क्षेत्र में तीन किलोमीटर लम्बी सड़क की सफाई कर स्वच्छता का प्रेरक सन्देश दिया। इसी प्रकार विशाखापट्नम में 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत polythene के बजाए कपड़े के थैलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। यहाँ के लोग पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए Single Use Plastic उत्पादों के खिलाफ़ अभियान भी चला रहे हैं। इसके साथ ही साथ ये लोग घर पर ही कचरे को अलग करने के लिए जागरुकता भी फैला रहे हैं। मुंबई के Somaiya College के Students ने स्वच्छता के अपने अभियान में सुन्दरता को भी शामिल कर लिया है। इन्होंने कल्याण रेलवे स्टेशन की दीवारों को सुन्दर पेंटिंग्स से सजाया है। राजस्थान के सवाई माधोपुर का भी प्रेरक उदाहरण मेरी जानकारी में आया है। यहाँ के युवाओं ने रणथंभौर में 'Mission Beat Plasitc' नाम का अभियान चला रखा है। जिसमें रणथंभौर के जंगलों से Plastic और Polythene को हटाया गया है। सबका प्रयास की यही भावना, देश में जनभागीदारी को मजबूत करती है और जब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जनभागीदारी हो तो बड़े से बड़े लक्ष्य अवश्य पूरे होते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज से कुछ दिन बाद ही ८ मार्च को पूरी दुनिया में International Women's Day 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाएगा। महिलाओं के साहस, कौशल, और प्रतिभा से जुड़े कितने ही उदाहरण हम 'मन की बात' में लगातार साझा करते रहे हैं। आज चाहे Skill India हो, Self Help Group हो या छोटे बड़े उद्योग हो, महिलाओं ने हर जगह मोर्चा संभाला हुआ है। आप किसी भी क्षेत्र में देखिए, महिलायें पुराने मिथकों को तोड़ रही हैं। आज हमारे देश में Parliament से लेकर पंचायत तक अलग-अलग कार्यक्षेत्र में महिलायें नई ऊँचाई प्राप्त कर रही हैं। सेना में भी बेटियाँ अब नई और बड़ी भूमिकाओं में ज़िम्मेदारी निभा रही हैं, और देश की रक्षा कर रही हैं। पिछले महीने गमतंत्र दिवस पर हमने देखा कि आधुनिक fighter planes को भी बेटियाँ उड़ा रही हैं। देश ने सैनिक स्कूलों में भी बेटियों के admission पर रोक हटाई और पूरे देश में बेटियाँ सैनिक स्कूलों में दाखिला ले रही हैं। इसी तरह, अपने start-up जगत को देखें, पिछले सालों में, देश में, हजारों नए start-up शुरू हुए। इनमें से करीब आधे start-up में महिलायें निदेशक की भूमिका में हैं। पिछले कुछ समय में महिलाओं के लिए मातृत्व अवकाश बढ़ाने जैसे निर्णय लिए गए हैं। बेटे और बेटियों को समान अधिकार देते हुए विवाह की उम्र समान करने के लिए देश प्रयास कर रहा है। इससे हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। आप एक और बड़ा बदलाव भी होते देख रहे होंगे। ये बदलाव है, हमारे सामाजिक अभियानों की सफलता। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की सफलता को ही लीजिए, आज देश में लिंग अनुपात सुधरा है। स्कूल जाने वाली बेटियों की संख्या में भी सुधार हुआ है। इसमें हमारी भी ज़िम्मेदारी है कि हमारी बेटियाँ बीच में स्कूल न छोड़ दें। इसी तरह, 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत देश में महिलाओं को खुले में शौच से मुक्ति मिली है। ट्रिपल तलाक जैसे सामाजिक बुराई का अंत भी हो रहा है। जब से ट्रिपल तलाक के खिलाफ़ कानून आया है देश में तीन तलाक के मामलों में ८० प्रतिशत की कमी आई है। ये इतने सारे बदलाव इतने कम समय में कैसे हो रहे हैं? ये परिवर्तन इसलिए आ रहा है क्योंकि हमारे देश में परिवर्तन और प्रगतिशील प्रयासों का नेतृत्व अब खुद महिलायें कर रहीं हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, कल २८ फरवरी को National Science Day' है। ये दिन Raman Effect की खोज के लिए भी जाना जाता है। मैं सी.वी रमन जी के साथ उन सभी वैज्ञानिकों को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, जिन्होंने हमारी Scientific Journey को समृद्ध बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साथियो, हमारे जीवन में सुगमता और सरलता में technology ने काफ़ी जगह बना ली है। कौन-सी technology अच्छी है, किस technology का बेहतर इस्तेमाल क्या है, इन सभी विषयों से हम भली-भाँति परिचित होते ही हैं। लेकिन ये भी सही है कि अपने परिवार के बच्चों को उस technology का आधार क्या है, उसके पीछे की science क्या है, इस तरफ हमारा ध्यान जाता ही नहीं है। इस Science Day पर मेरा सभी परिवारों से आग्रह है कि वो अपने बच्चों में Scientific Temperament विकसित करने के लिए ज़रूर छोटे-छोटे प्रयासों से शुरू कर सकते हैं।

अब जैसे दिखता नहीं है चश्मा लगाने के बाद साफ़ दिखने लगता है तो बच्चों को आसानी से समझाया सकता है कि इसके पीछे विज्ञान क्या है। सिर्फ चश्मे देखें, आनंद करें, इतना नहीं। अभी आराम से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आप एक छोटे से कागज़ पर उसे बता सकते हैं। अब वो Mobile Phone उपयोग करता है, Calculator कैसे काम करता है, Remote Control कैसे काम करता है, Sensor क्या होते हैं? ये Scientific बातें इसके साथ-साथ घर में चर्चा में होती है क्या? हो सकती है बड़े आराम से हम इन चीज़ों को घर की रोजमर्रा की ज़िन्दगी के पीछे क्या Science की वो कौन सी बात है जो ये कर रही है, इसको समझा सकते हैं। उसी प्रकार से क्या कभी हमने बच्चों को लेकर के भी आसमान में एक साथ देखा है क्या? रात में तारों के बारे में भी ज़रूर बातें हुई हों। विभिन्न तरह के constellations दिखाई देते हैं, उनके बारे में बताएँ। ऐसा करके आप बच्चों में Physics और Astronomy के प्रति नया रुझान पैदा कर सकते हैं। आज कल तो बहुत सारी Apps भी हैं जिससे आप तारों और ग्रहों को locate कर सकते हैं, या जो तारा आसमान में दिख रहा है उसको पहचान सकते हैं, उसके बारे में जान भी सकते हैं। मैं, अपने start-up को भी कहूँगा कि आप अपने कौशल और Scientific Character का इस्तेमाल राष्ट्र-निर्माण से जुड़े कार्यों में भी करें। ये देश के प्रति हमारी Collective Scientific Responsibility भी है। जैसे आजकल मैं देख रहा हूँ कि हमारे Start-ups Virtual reality की दुनिया में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। Virtual Classes के इस दौर में ऐसे ही एक Virtual lab बच्चों को ध्यान में रखते हुए बनाई जा सकती है। हम virtual reality के द्वारा बच्चों को घर में बैठे chemistry की lab का अनुभव भी करा सकते हैं। अपने शिक्षकों और अभिभावकों से मेरा आग्रह है कि आप सभी विद्यार्थियों एवं बच्चों को सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करें और उनके साथ मिलजुल कर सवालों का सही जवाब तलाशें। आज मैं, कोरोना के खिलाफ़ लड़ाई में भारतीय वैज्ञानिकों की भूमिका की भी सराहना करना चाहूँगा। उनके कड़े परिश्रम की वजह से ही Made in India वैक्सीन का निर्माण संभव हो पाया, जिससे पूरी दुनिया को बहुत बड़ी मदद मिली है। Science का मानवता के लिए यही तो उपहार है।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार भी हमने अनेक विषयों पर चर्चा की। आने वाले मार्च के महीने में अनेक पर्व-त्योहार आ रहे हैं- शिवरात्रि है और अब कुछ दिन बाद आप सब होली की तैयारी में जुट जाएँगे। होली हमें एक सूत्र में पिरोने वाला त्योहार है। इसमें अपने-पराए, द्वेष-विद्वेष छोटे-बड़े सारे भेद मिट जाते हैं। इसलिए कहते हैं, होली के रंगों से भी ज्यादा गाढ़ा रंग, होली के प्रेम और सौहार्द का होता है। होली में गुजिया के साथ-साथ रिश्तों की भी अनूठी मिठास होती है। इन रिश्तों को हमें और मजबूत करना है और रिश्ते सिर्फ अपने परिवार के लोगों से ही नहीं, बल्कि उन लोगों से भी जो आपके एक बृहद् परिवार का हिस्सा है। इसका सबसे महत्वपूर्ण तरीका भी आपको याद रखना है। ये तरीका है - 'Vocal for Local' के साथ त्योहार मनाने का। आप त्योहारों पर स्थानीय उत्पादों की खरीदी करें जिससे आपके आसपास रहने वाले लोगों के जीवन में भी रंग भरे, रंग रहे, उमंग रहे। हमारा देश जितनी सफलता से कोरोना के खिलाफ़ लड़ाई लड़ रहा है और आगे बढ़ रहा है, उससे त्योहारों में जोश भी कई गुना हो गया है। इसी जोश के साथ हमें अपने त्योहार मनाने हैं और साथ ही अपनी सावधानी भी बनाए रखनी है। मैं आप सभी को आने वाले पर्वों की ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे हमेशा आपकी बातों का, आपके पत्रों का आपके संदेशों का इंतज़ार रहेगा। बहुत बहुत धन्यवाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रो .सी .जी .राजगोपाल

केरल के आलिम आचार्यवर प्रो.सी.जी.राजगोपाल

प्रो ,हिल्डा जोसफ़

भारत राष्ट्र के दक्षिणांत राज्य केरल के जाने-माने मनीषी आचार्यवर हैं प्रो.सी.जी.राजगोपाल। लंबे अरसे से भाषा-साहिती-कला-क्षेत्रों में उनके व्यक्तित्व एवं विद्वत्ता पर जो निखार आ रहा है, वह बेशक समुल्लेख्य है। एक प्रगल्भ हिन्दी अध्यापक, मलयाळम के भावुक कविवर, सरस समर्पित कलाप्रेमी आदि आयामों में हुए उनके अप्रतुल योगदान से केरल के भाषाप्रेमी जन अवगत हैं। इस वरेण्य शब्दशिल्पी आचार्य की व्यक्ति-सृजन-गरिमा पर रोशनी डाल रही हूँ मैं, अतीव गरूर से।

यह सन् २०१७। पचासी की आयु में पदार्पण कर चुके थे ये विद्वत्वर्य। ज़िन्दगी के इन विलंबित क्षणों में भी ये मननशील गुरुवर अतिशय ऊर्जस्विता एवं मनस्विता से अपनी नैसर्गिक प्रतिभा को निखारते आ रहे थे - यह तो अपने आप में एक चमत्कार ही है। अध्यात्मदर्शन एवं उदात्त मानवीय संस्कृति का अद्वितीय गुरु 'भारत' उनके हृत्तल में नीलांबर का वितान-सम सुभासित है। सुनने को आया था कि ये महात्मा तुलसीदास के 'रामचरितमानस' का मलायळम में अनुवाद कर रहे हैं। उनका यह भागीरथी प्रयास, यह रचनात्मक आयाम हमारे साहिती-भण्डार में एक समुज्वल पृष्ठ सजा लेगा - इसमें हमें कोई संदेह न था।

प्रेम का ढाई आखर पढ़े पंडिता, आचार्यवर, लगभग तीन दशकों तक हिन्दी भाषा में विशेष नैपुण्य से युक्त हो अध्यापन-कला में संलग्न रहे शिक्षक श्रेष्ठ, केरल की मातृभाषा मलयाळम तथा कलामंच पर मधुकल्पनाओं का मोहन संसार रचा-बसाकर धन्य हो रहे सहृदय गुरुवर, अपने शीलवंत आभरण तथा ममत्व से अनेकों की प्रीति व श्रद्धा पा रहे मुहब्बती महाशय, संवेदना, समभाव आदि गुणों के मूर्तरूप - ये हैं प्रो.सी.जी.राजगोपाल।

गत अर्धशती के अंतराल में इस वरिष्ठ आचार्य को निकट से निरखने-पहचानने को हुआ मुझे। उनके अद्वितीय गुणी व्यक्तित्व ने मुझ पर गहरा असर डाला। ऐसे व्यक्ति थोडे ही होंगे जो उनके संपर्क में आकर उस प्रसादमय व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना लौटे हों। जीवन की व्यथाएँ दिल में थामे, अधरों में हास छलकाये रहनेवाले इस सद्मना आचार्य के चरणों पर मैं शीश नवाती हूँ।

इस प्रतिभाधनी आचार्यवर से मुझे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी किसी साहित्यिक बातचीत का अवसर न मिला था, न उनके शिष्यत्व में पलने का मौका भी। उनसे मिलना-बातियाना मुझे नसीब हुआ इत्तफाक से - जब तिरुवनन्तपुरम के यूनिवेर्सिटी कॉलेज में मैं बी.ए. हिन्दी की छात्रा थी (१९५८)। एक दिन हिन्दी विभाग में उनका आना हुआ। (इस दौरान श्री राजगोपालजी पाला के सेंट थॉमस कॉलेज में हिन्दी प्राध्यापक थे) तब उनकी भद्रवाणी सुनने को हुई। हम पाँच-छः छात्राएँ उन विद्वान गुरुवर से आशिष लेने हिन्दी विभागाध्यक्ष के कमरे में पहुँचीं। पितृसहज वात्सल्यातिरेक से आप हमसे बोलने लगे। हम विस्मित हुईं। लखनऊ विश्वविद्यालय के अपने पठनकाल के अनुभवों का उन्होंने साझा किया, बड़े गर्व से। हिन्दी प्रदेश जाकर हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा पाने तथा वहाँ के पंडित महाशयों के व्यक्तिप्रभाव की छाँह में रहने का जो सौभग्य उन्हें मिला था, उसपर सानन्द वे बोलते गये। हम छात्राओं का पता-ठिकाना पूछने के बाद कुछ छात्रोपयोगी उपदेश भी दिये। हिन्द देश की सन्तान होने के नाते हिन्दी लगन से पढ़ने का आदेश दिया गया। संस्कृत की निम्नांकित पंक्तियाँ रटते हुए गुरुवर ने हमें पढाई में यज्ञभावना के साथ लगने को सचेत किया :-

काकदृष्टि बकध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च/ अल्पाहारं जीर्णवस्त्रं विद्यार्थी पंच लक्षणभर।

छात्रों को पढ़ाई में जागरूक करना, छात्रधर्म से अवगत कराना, सही मार्गदर्शन कराना एक सच्चे अध्यापक का कर्तव्य है - इस दृष्टि से एक आदर्श अध्यापक के रूप में श्री राजगोपील जी मेरे मन में सुप्रतिष्ठा पा गये। फिर पता चला कि १९५७ में लखनऊ विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी परीक्षा में आप सर्वप्रथम (I Rank) आये थे और 'पंडित टीकाराम मिश्र स्वर्णपदक' धारी हो आये सुयोग्य विद्वान हैं।

फिर कई बार साहित्यिक संगोष्ठियों में सभापति, मुख्यातिथि, व्याख्याता आदि पदों पर विराजते हुए मैं ने उनको देखा, उनकी प्रगल्भ वाणी सुनी।

मेरे अध्यापन-जीवन में भी प्रो.सी.जी.राजगोपाल एक अच्छे मार्गदर्शी रहे। १९८३ का एक अनध्यायकाल। अनावर्षण का मौसम था। गर्मियों की छुट्टियों में अपने आँगन में तपिश में सूखते पौधों को मैं सींच रही थी। धुँधली सायं। अकस्मात् एक प्रौढ स्वर मेरे कानों पर पड़ा – "हिल्डा, फाटक खोलो, मैं हूँ राजगोपाल यहाँ।"

दंग रह गयी मैं। बाल्टी वहीं छोड़ दौडे आयी। फाटक खोला, सादर नमस्ते किया। मेरे घर का पता ढूँढ़कर आये थे वे आचार्यवर - मेरे माता-पिता से मिलने। उस महामना की मेहर पाकर बहुत प्रसन्न हुए मेरे माता-पिता। आचार्यजी बोलने लगे - "मेरी बेटी शारिका विमन्स् कॉलेज में हिन्दी बी.ए. की छात्रा है, हिल्डा उसकी अध्यापिका है। शारिका से जान गया कि हिल्डा अध्यापनकला में विशेष लगन व क्षमता रखनेवाली अध्यापिका हैं।

उस गुरुवर के ये वचन मेरी अध्यापनवृत्ति में खास प्रेरणादायक हुए। आगे भी उन परम श्रद्धेय आचार्यवर से मुझे बढावा मिलता रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी के वरेण्य अध्यापक श्री सी.जी.राजगोपाल

लगभाग तीन दशक का कॉलेजीय अध्यापन-अनुभव श्री राजगोपालजी के व्यक्तित्व-इतिहास का एक समुज्वल पृष्ठ खोल देता है हमारें सामने। केरल के विविध महाविद्यालयों में - सेन्ट थॉमस कॉलेज, पाला, सरकारी कॉलेज - मटप्पल्ली, ब्रण्णन कॉलेज - तलश्शेरी, विक्टोरिया कॉलेज - पालघाट में एक विपुल छात्र समाज के प्रिय एवं प्रगल्भ गुरुवर थे प्रो.राजगोपालजी। उनकी निष्णात अध्यापनकला से प्रभूत ज्ञान-संपदा छात्रों के लिए कितनी फायदेमंद रही, उनके छात्रों से सुनने को आयी। एक अध्यापक की हैसियत से अपना श्रमार्सित ज्ञानभण्डार छात्रों के लिए छलकाये रहनेवाले आदर्श अध्यापक। हिन्दी भाषा में उनकी वागधारा विशेष प्रवहमान है, रोचक है, प्रभावकारी है। मातृभाषा मलयाळम के प्रेमी उपासक प्रो.राजगोपालजी हिन्दी भाषा का जब जब, जहाँ जहाँ व्यवहार करना पड़े, बड़े गर्व से, ऊर्जा से धारावाहिक बोलते हैं वह भाषा। इस मामले में उनका वर्षों पहले के छात्र आज भी पूरी लगन से उनको स्वीकृति दे रहे हैं।

चौंसठ साल पूर्व - १९५८ में मध्यकेरल के सेंट थॉमस कॉलेज, पाला में प्रो.सी.जी.राजगोपाल के शिष्यत्व में अनुगृहीत हुए एक बी.ए. हिन्दी छात्र (अब के सेवानिवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष, सेंट थॉमस कॉलेज, पाला।) श्री एन.के.जोसफ़ अपने उस गरिष्ठ अध्यापकवर्य की प्रौढ़ स्मृतियाँ संजोये, पाला की अपनी रिहाइश में रहते हैं। उस सुविज्ञ श्रद्धेय आचार्यवर से मेरी दूरभाषीय बातचीत हुआ करती है। जब जब बातें होती हैं, अपने प्रिय प्रतिमान गुरुवर सी.जी.आर. के वरिष्ठ व्यक्तित्व एवं अध्यापनकला-निपुणता का उल्लेख अवश्य करते। उस आचार्यवर एन.के.जोसफ की दिलदार वाणी में देखिए अध्यापक प्रो.सी.जी.आर. का भव्य चित्र - "यह सर्वविदित है कि केरल में हिन्दी अध्ययन और प्रचार की विकासयात्रा में सन् १९५७ की महती भूमिका है। क्योंकि उसी वर्ष केरल विश्वविद्यालय द्वारा केरल के दो ख्यातिप्राप्त महाविद्यालयों को - युनिवेर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुम और सेंट थॉमस कॉलेज, पाला - हिन्दी में स्नातकोत्तर अध्ययन शुरु करने की अनुमति दी गयी थी। पाला में हिन्दी एम.ए. विभाग के अध्यक्ष पद पर यू.पी. के बुलन्द शहर निवासी हिन्दीभाषी पंडित डॉ.रघुवीर शरण व्यथित की नियुक्ति हुई। हिन्दी एम.ए.की प्रथम कक्षा के छात्र के रूप में मुझे वहाँ प्रवेश मिला। एम.ए. के द्वितीय वर्ष १९५८ में सी.जी.राजगोपाल नामक नये प्राध्यापक नियुक्त हो आये। सुना कि वे केरलीय हैं और हिन्दी की हृदयभूमि यू.पी. के लखनऊ विश्वविद्यालय से सुवर्णपदक सहित सर्वोच्च श्रेणी में हिन्दी एम.ए. की उपाधि पा चुके हैं। हम एम.ए. के छात्र बड़े कौतूहल से उस युवा प्राध्यापक को देखने-सुनने के लिए प्रतीक्षारत हुए। हमने देखा कि वह युवा-प्राध्यापक हिन्दी भाषा का माहौल एवं भावात्मक चारुता अपने साथ लेकर आया है। उनके सुन्दर और तेजस्वी व्यक्तित्व से हम सब बेहद प्रभावित हुए। ऐसा लगा कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक प्रकार का वसन्तकालीन नवोन्मेष हम छात्रों में परिव्याप्त हो रहा है। एक स्नेही अध्यापक थे वे। छात्रों से अलगाव या दूरी रखना उनका ढंग-तरीका नहीं था। छात्रों से मैत्री भाव तथा नज़दीकी रखना उनकी सहज रीति थी। उनकी आवाज़ में अतुल आत्मविश्वास और गरिमा की चमक प्रकट थी जो हम छात्रों को बेहद प्रेरणादायक बन गयी। अध्यापन संबन्धी, गुरुवर की स्वकीय कल्पनायें थीं। पाठ्यपुस्तकों की सीमाओं के अन्दर-अन्दर छात्रों को बाँधे रखना वे श्रेयस्कर नहीं मानते थे। अध्यापनकार्य में ही नहीं अपनी रचनाधर्मिता में भी राजगोपालजी शिबिरबद्धता से दूर रहते आये हैं। याद रखें ये गुरुवर जाने माने कवि भी हैं। वे मलयाळम में 'नादत्रयम्' शीर्षक एकमात्र कविता-संकलन को जन्म देकर काफ़ी यशोवान हुए।

प्रो.राजगोपालजी हमें पंत, निराला, महादेवीवर्मा आदि छायावादी कवियों की कविताएँ पढाते थे। इन साहित्यिक विभूतियों की कविताओं की राहों से हमें ले जाते हुए गुरुजी अंग्रेज़ी के रोमांटिक आन्दोलन की भुमिका, प्रेरणास्रोत, विविध-धाराएँ आदि का परिचय भी कराते थे। रोमान्टिक कविता सौन्दर्य और विस्मय की कविता है (Romanticism is the poetry of beauty and wonder) आदि उक्तियों के आधार पर वेड्सवर्थ, कीट्स, षेल्ली आदि के रचना-संसार से जिस विदग्धता से गुरुजी ने हमें परिचित कराया, वह आज भी हमारे दिलों में चिरमुद्रित है। एक अध्यापक की ऐसी तुलनात्मक दृष्टि एवं साहित्यानुशीलन छात्रों को साहित्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य की ओर ले जाने में कितना काम आते हैं, हम समझ लें।

एक वर्ष की सार्थक अक्षरोपासना के बाद आदरणीय गुरुवर ने संत थॉमस कॉलेज से विदा ली। सरकारी कॉलिजीय सेवा स्वीकार की। उसके बाद कई बार उनके निवास में जाने और उनसे सलाह मशविरा करने के मौके मिले। प्रो.सी.जी.राजगोपाल जी मेरे ऐसे हितैषी शुभेच्छु गुरुवर हैं जिनका प्रेम और आशीर्वाद जीवन के विविध मोडों पर मेरे लिए पाथेय और मार्गदीप रहे। मेरे बेटें प्रणाम जोसफ के भी वे मार्गदर्शक बन गये। प्रिय गुरुवर का निमंत्रण पाकर, मैं प्रणाम समेत उनके घर गया था २०१८ के एक दिन। उन्होंने 'तुलसी रामायण' का मलयाळम में अनूदित अपना बृहत ग्रंथ भेंट स्वरुप देकर मुझे अनुगृहीत किया। वह एक भावभीनी मुलाकात थी।

"गुरुवर को शतः शतः प्रणाम!"

O

जल ही जीवन है; बूँद बूँद बचा लीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता के नए प्रतिमान : आलोचना का ज्ञान कोष

सी.बालसुब्रह्मण्यन

द्वितीय विश्वमहायुद्धोत्तर संसार ने परंपरागत चिंतन में दरार डालकर विश्व भर में जिस ढंग का नया चिंतन विकसित किया है- हिन्दी साहित्य की दुनिया भी उस चिंतन का दुर्निवार अंग रही है। हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में इस चिंतन का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं डॉ. नामवर सिंह। हिन्दी की आधुनिक सैद्धांतिक समीक्षा में साहित्यिक मूल्यवत्ता के प्रतिमानीकरण से संबंधित सभी मूल प्रश्न समाहित रहे हैं। इसका साकार रूप है डॉ. नामवर सिंह की रचना 'कविता के नए प्रतिमान'। आलोच्य रचना हमें इस दिशा में सोचने के लिए बाध्य करती है कि सार्थक रचना की तरह सार्थक आलोचना भी अपने समय और समाज की हलचलों और वैचारिक तथा संवेदनात्मक परिवर्तनों के बारे में सजग होती है। सन् १९६८ में प्रकाशित प्रस्तुत रचना आलोचक के एक दौर की वैचारिक निष्पत्ति कही जा सकती है।

'कविता के नए प्रतिमान' के दो खंड हैं। प्रथम खंड में भूमिका के बाद अध्यायों के शीर्षक हैं - कविता क्या है? कविता के नए प्रतिमान? रस के प्रतिमान की प्रसंगानुकूलता, मूल्यांकन की समस्या: छायावादोत्तर कविता, मूल्यों का टकराव: उर्वशी विवाद पुनर्मूल्यांकन का एक उदाहरणः कामायनीः तारसप्तकः इतिहास की आवृत्ति। दूसरे खंड के अध्याय हैं - काव्य भाषा और सृजनशीलता, काव्य बिम्ब और सपाटबयानी, काव्य संरचना: प्रगीतात्मक और नाटकीय, विसंगति और विडंबना, अनुभूति की जटिलता और तनाव, ईमानदारी और प्रामाणिक अनुभूति, परिवेश और मूल्य। इन दोनों खंडों के अध्यायों के अलावा परिशिष्ट में दो निबंध हैं - अंधेरे में परम अभिव्यक्ति की खोज तथा अंधेरे में: पुनश्च। अंधेरे में: पुरश्च द्वितीय संस्करण में जोड़ा गया निबंध है।

प्रथम खंड के अंतर्गत विशेषत: तारसप्तक, कामायनी, उर्वशी आदि कृतियों और सामान्यतः छायावादोत्तर कविता की उपलब्धियों को लेकर समय-समय पर जो विवाद हुए हैं उनमें टकरानेवाले मूल्यों की पड़ताल की गई है। इस प्रसंग में नए दावे के साथ प्रस्तुत 'रस सिद्धांत' की प्रसंगानुकूलता पर भी विचार किया गया है।

दूसरे खंड में कविता के नए प्रतिमान के नाम पर प्रस्तुत अनुभूति की प्रामाणिकता, ईमानदारी, जटिलता, द्वंद्व, तनाव, विसंगति, विडंबना, सर्जनात्मक भाषा, बिम्बात्मकता, सपाट बयानी, फैंटसी, नाटकीयता आदि आलोचनात्मक या संकलनात्मक पदों की सार्थकता का परीक्षण किया गया है। इस प्रक्रिया में भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों, मनीषियों के विचारों, कवियों की कविताओं, विशेषकर हिन्दी के अनेक कवियों की संक्षिप्त अर्थ-मीमांसा की गई है, जिनसे लेखक द्वारा समर्थित काव्य-मूल्यों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की प्रतीति होती है। रघुवीर सहाय, अज्ञेय, रामस्वरूप चतुर्वेदी, अभिनव गुप्त, डॉ. देवराज, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, अमरीकी आलोचक क्लीन्थ ब्रूक्स, अमरीकी भाषा वैज्ञानिक एडवर्ड समीर, सुमित्रानंदन पंत, धर्मवीर भारती, विजय देवनारायण साही, निराला, भट्टनायक, कालिदास, केदारनाथ सिंह, नगेन्द्र, शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, एफ.आर. लीविस, केदारनाथ अग्रवाल, राजकमल चौधरी, अशोक वाजपेयी, श्रीकांत वर्मा, लक्ष्मीकांत वर्मा, अंग्रेज़ी आलोचक डोनाल्ड डेवी, टी.एस.इलियट, फ्रैंक कर्मोड, विलियम एंपसन, पी. एन. फरबैंक, ज्याँ पाल सार्त्र, गिलबर्ट राइल, गिरिजाकुमार माथुर, जानकी वल्लभ शास्त्री, नागार्जुन, महादेवी वर्मा, अंग्रेज़ी कवि डन, मार्वेल (मेटालिनिकल कवि), हरिवंशराय बच्चन, बिम्बवादी कविता के प्रवक्ता रिचर्ड एल्डिंगटन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अरस्तू, अमेरीकी आलोचक आइवर विंटर्स, गब्रिएल पियर्सन, भवानीप्रसाद मिश्र, नरोत्तमदास, अजितकुमार, भरतमुनि, अंग्रेज़ी कवि ऑडेन, विपिनकुमार अग्रवाल, धूमिल, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, कुँवर नारायण, अमरीका के आधुनिक आलोचक रिचर्ड ब्लैकमर, मैथिलीशरण गुप्त, भवभूति, पंडितराज जगन्नाथ, आई.ए.रिचड्र्स, जयशंकर प्रसाद, राबर्ट पेन वारेन, टेनिसन, शेली, दिनकर, भगवती चरण वर्मा, नेहरू, गाँधीजी, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, डब्ल्यू, डब्ल्यू रॉबसन, अंग्रेज़ी की उपन्यास-लेखिका और दर्शनशास्त्र की अध्यापिका ईरिस मर्डोक, अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एरिक एरिक्सन, फ्रांसीसी कवि रैंबो, ज्याक रिविएर, स्त्राविंस्की, नेमिचन्द्र जैन, श्रीराम वर्मा, सुरेन्द्र चौधरी, ब्रेख्त, भामट्ट, राजशेखरन, महिमभट्ट, मलयज, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जार्ज ऑरवेल, मार्क्स आदि इतने आलोचकों, कवियों, दार्शनिकों, विचारकों के नामों, उनकी रचनाओं, पंक्तियों, विचारों का उल्लेख, विश्लेषण एवं अर्थ मीमांसा करने पर भी नामवरजी के शब्दों में- यह तथ्य अनदेखा नहीं किया जा सकता कि कविता के नए प्रतिमान के केन्द्र में मुक्तिबोध हैं। उन्होंने छायावादोत्तर परिदृश्य पर बड़े कवि के रूप में मुक्तिबोध को प्रतिष्ठित किया।

सृजनात्मक मन की नवीनता-मौलिकता सांस्कृतिक मन के साथ प्रायोगिक मन के टकराव को लेकर युगीन बोध के द्वंद्व एवं तनाव को विस्तृत करती जाती है। उसके कथ्यगत एवं शिल्पगत संदर्भ सांस्कृतिक बोध के सौन्दर्यशास्त्रीय प्रत्ययों, अवधारणाओं आदि से नवीन प्रतिमानों की प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता आदि निर्धारित करते रहते हैं। इस तथ्य के आलोक में छायावादोत्तर कविता के मूल्यांकन की समस्या पर विचार करते हुए आलोचक ने स्पष्ट किया है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया से अलग, सूत्रों में निचोड़कर रखा हुआ प्रतिमान काव्य का प्रतिमान नहीं, गल्ला तोलने का बाँट या कपड़ा नापने का गज है। यह एक प्रकार से 'कविता के नए प्रतिमान' पुस्तक की सैद्धांतिक आधारभूमि का बखान है।

उपर्युक्त आलोचना प्रक्रिया के सिलसिले में नामवरजी ने विजय देवनारायण साही की मूलभूत मान्यता को कविता के नए प्रतिमान के प्रथम अध्याय 'किविता क्या है?' के अंत में साभार उद्धृत किया है- "समूची नई कविता को ठीक-ठीक देखने के लिए नई कविता के प्रतिमान की ज़रूरत नहीं है, बल्कि कविता के नए प्रतिमान की ज़रूरत है।" (कविता के नए प्रतिमान, पृ.२७) आगे वे कहते हैं- "नई कविता की आलोचना में प्रायः पुराने प्रतिमान क्यों इस्तेमाल किए गए, यदि इसकी जाँच की जाए तो साफ मालूम होगा कि जिन्हें हम पुराने प्रतिमान कहते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं, वे वस्तुतः पुराने संस्कार हैं। नामवरजी के विचार में नए-से-नए काव्य सृजन के ग्रहण में बाधक छद्म छायावादी आग्रहों के विरुद्ध संघर्ष है। छायावाद की अनुभूति तथा नई कविता की अनुभूति को अलगाने में नामवरजी ने अज्ञेय द्वारा समर्थित रागात्मक संबंधों के बदलाव का सिद्धांत ग्रहण किया है। इसके ज़रिए वे डी.एच.लॉरेन्स, टी.एस.इलियट आदि से प्रभावित हैं। उनके विचार में छायावादी काव्य-रचना की प्रक्रिया जहाँ भीतर से बाहर की ओर है वहाँ नई कविता की रचना प्रक्रिया बाहर से भीतर की ओर है। यों 'कविता के नए प्रतिमान' पुस्तक नए मूल्यों की खोज और प्रतिष्ठा को लेकर चलने वाले संघर्ष का सिलसिला प्रस्तुत करती है। इसलिए सभी कालों की कविता के काव्य -बोध को परखने के लिए नामवरजी ने इसकी रचना की है।

छायावादी संस्कार के बारे में आगे वे बताते हैं- "छायावादी संस्कार की दृढ़ता का दूसरा उदाहरण ज़्यादा गंभीर है। इसका श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को है। सामान्यतः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल छायावाद के विरोधी समझे जाते हैं, किंतु तथ्य है कि वे स्वच्छंदतावाद के विरोधी न थे।" (पृ.३०) लेकिन आगे वे जो बताते हैं वह चौंकानेवाली बातें हैं - "इधर यह अनुभव किया जा रहा है कि प्रयोगशील-नई कविता ने भी आरंभिक प्रतिक्रिया के बावजूद छायावादी संस्कारों को निर्मूल करने का गंभीर प्रयास नहीं किया।" (पृ.३३) नामवरजी के विचार में मुक्तिबोध इसके अपवाद थे और इसलिए- "इस प्रतिरोध के कारण मुक्तिबोध नई कविता के पूरे दौर में प्रायः उपेक्षित रहे।.....मुक्तिबोध को छोड़कर नई कविता का स्वीकृत होना इस बात का पक्का प्रमाण है कि नई कविता ने कहीं न कहीं पूर्ववर्ती रोमांटिकता के साथ चुपचाप समझौता कर लिया था। इस बारे में नई कविता के अंतर्गत मुक्तिबोध की स्थिति बहुत कुछ वही है, जो छायावाद के अंतर्गत निराला की थी।" (पृ.३४-३५)

मूल्यांकन की समस्याः

छायावादोत्तर कविता' नामक अध्याय में नामवरजी ने बताया है- पिछले वर्षों की काव्य चर्चा से क्रमशः यह धारणा स्थिर हो चली थी कि हिन्दी कविता में छायावाद के बाद सबसे मूल्यवान रचनाएँ नई कविता के साथ आईं, लेकिन डॉ. नगेन्द्र के निबंध 'छायावादोत्तर हिन्दी कविता मूल्यांकन की समस्या' (साप्ताहिक हिन्दुस्तान; १० मार्च १९६८) से पता चलता है कि इस धारणा के विरुद्ध कुछ क्षेत्रों में अब भी प्रतिरोध है, और उनका आग्रह है कि छायावाद के बाद भी सर्वाधिक मूल्यवान काव्य-सर्जना मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, माखनलाज चतुर्वेदी, नवीन, दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा आदि प्रतिष्ठित कवियों ने ही की (पृ.५५)। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि डॉ. नागेन्द्र ने रस का समर्थन किया है नामवरजी ने विरोध किया है। उन्होंने रस को काव्यास्वाद की प्रक्रिया स्वीकार किया है। यहाँ आइ.ए. रिचर्डस के विरुद्धों के सामंजस्य के सिद्धांत का समर्थन भी उन्होंने किया है और इसी आधार पर मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' की संरचना का विश्लेषण भी किया है।

कामायनी के पुनर्मूल्यांकन के बारे में नामवरजी कहते हैं- "मुक्तिबोध का 'कामायनीः एक पुनर्विचार' समकालीन साहित्य में पुनर्मूल्यांकन के बहाने नए मूल्यों का ऐतिहासिक दस्तावेज है जो समकालीन साहित्य के मूल्यांकन के साथ ही समकालीन संदर्भ में अपनी पूरी परंपरा का पुनर्मूल्यांकन करने की दृष्टि देता है।" (पृ.७९)

'काव्य रचनाः प्रगीतात्मक और नाटकीय' अध्याय के अंत में नामवरजी ने कहा है - "वस्तुतः 'अंधेरे में' कविता की अर्थवत्ता उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वप्न चित्रमय वातावरण में है जो अपनी नाटकीय संरचना के द्वारा सीधे-सादे वाक्यों को भी काव्यात्मक गूँज से अनुरणित कर देता है। '....अंधेरे में' कविता को पढ़कर कोई यह महसूस किए बिना नहीं रह सकता कि यह आज का भारत है। स्वप्न जैसी एक यथार्थ कला के द्वारा यथार्थ की काव्यात्मक पुनःसृष्टि करके मुक्तिबोध ने एक विरोधाभास का ही चमत्कार पैदा नहीं किया बल्कि आधुनिक हिन्दी कविता में एक कालजयी कृति की रचना की है, जिसे निःसंकोच निराला की 'राम की शक्तिपूजा' के बाद की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है।" (कविता के नये प्रतिमान, पृ.१५१) 'विसंगति और विडंबना' नामक अध्याय में विसंगति और विडंबना को काव्य-प्रतिमान के रूप में स्वीकृत किया है और धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' का एक प्रभावशाली रचना के रूप में समर्थन किया है। विसंगति और विडंबना को यहाँ अस्तित्ववादी रुझान से हिन्दी में अपनाया गया है।

काव्य भाषा और सृजनशीलता का प्रश्न नई समीक्षा के प्रभाव से नई कविता में बहुचर्चित रहा है। मार्क्सवादी खेमे से बाहर के रचनाकारों तथा आलोचकों ने इस काव्य-प्रतिमान का जोरदार समर्थन किया है। इसका श्रीगणेश करनेवाले अज्ञेय ही थे। उन्होंने काव्य-भाषा को प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया और घोषणा की कि शब्द ही कविता है। यहाँ रॉन्सम आदि नई समीक्षा के विचार में रूपपक्ष ही प्रमुख है वस्तु या कथ्य पक्ष नकारने योग्य है। नामवर जी ने भी भाषा को प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया है।

'काव्य बिम्ब और सपाटबयानी' नामक अध्याय में बिम्ब को काव्य-प्रतिमान मानने वाले पश्चिमी आलोचकों की चर्चा की गई है। यहाँ डॉ.एफ.आर. लीविस के इमेजरी एंड मूवमेंट(बिम्ब और गतिमयता) नामक निबंध का उल्लेख नामवरजी ने किया है। बिम्बों में लीविस का काव्य मूल्य के रूप में गतिमयता का सिद्धांत इन्हें बहुत पसंद है। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि नामवरजी नगेन्द्र की काव्य-दृष्टि को टी.एस.इलियट के बिम्ब-प्रतीकवादी सिद्धांत से खण्डन करते हैं। इस सिलसिले में उन्होंने डोनाल्ड बडेवी, फ्रैंक कर्मोड, विलियम एंपसन आदि के विचारों की भी चर्चा की है। अंत में बिम्बवाद के व्यक्तिवाद पर प्रहार करके मॉर्क्सवादी हो जाते हैं।

'काव्य संरचनाः प्रगीतात्मक और नाटकीय' शीर्षक अध्याय में नामवरजी ने निराला जी के संरचना से संबंधित वक्तव्य को उद्धृत करने के बाद आवयविक सिद्धांत (Organic Theory) को स्वीकृति दी है। असल में आवयविक सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जिसको मॉर्क्सवादियों और स्वच्छंदतावादियों से स्वीकृति मिली है। स्वच्छंदतावादियों ने इसे आत्मनिष्ठ रूप में स्वीकार किया है तो मार्क्सवादियों ने वस्तुनिष्ठ रूप में। मार्क्सवादी आलोचक होने के कारण नामवर जी ने वस्तुनिष्ठ रूप करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

'अनुभूति की जटिलता और तनाव' की चर्चा काव्यानुभूति की समस्या से जुड़ी है। समस्या काव्यानुभूति के मात्रा तथा गुण के माप की है। भारतीय काव्यशास्त्र में रसानुभूतियों का वर्गीकरण नहीं है। रस असल में सहृदयनिष्ठ और आत्मनिष्ठ है उसकी कोटियाँ नहीं हैं। लेकिन नगेन्द्र ने रिचर्डस से प्रभावित होकर चित्तवृत्तियों में रस मात्रा-भेद के साथ 'समाहिति' खोजनी चाही है और शाकुन्तलम् की अपेक्षा उत्तर रामचरितम् अधिक सरस है जैसी बात को सार्थक माना है। रिचर्डस ने काव्य के दो भेद किए हैं - Poetry of Inclusion और Poetry of Exclusion. रिचर्डस के विचार में Poetry of

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Inclusion, Poetry of Exclusion से श्रेष्ठ है। आगे चलकर रिचर्डस के काव्य-विभाजन के आधार पर राबर्ट पेन वैरेन ने Pure and Impure Poetry (शुद्ध और अशुद्ध कविता) की परिकल्पना की। नामवर जी के अनुसार दिनकर की शुद्ध कविता की भावना के पीछे इसका प्रभाव है। मुक्तिबोध ने नयी कविता में द्वंद्व को प्रधानता दी है। उन्होंने उसे तनाव तथा घिराव के वातावरण तक पहुँचाया है। अज्ञेय ने भी 'मानसिक तनाव' की चर्चा की है। लेकिन अज्ञेय और मुक्तिबोध के तनाव की प्रकृति में अंतर है।

ईमानदारी और प्रामाणिक अनुभूति अध्ययन में नामवरजी ने सातवें दशक के हिन्दी कवियों की चर्चा की है। उनके शब्दों में - "सातवें दशक के कवियों में से कुछ ने तो 'ईमानदारी' और 'प्रामाणिकता' जैसे शब्दों को निरर्थक मानकर एकदम छोड़ देना ही उचित समझा; किंतु कुछ को अब भी पुराने शब्दों में नया अर्थ भरने की क्षमता में विश्वास है, इसलिए उन्होंने एक नये अर्थ के साथ ईमानदार आवाज़ फिर उठाई। इस बार ईमानदारी विद्रोह का पर्याय बनकर प्रकट हुई, जिसमें ईमानदारी का मतलब था साहस। यहाँ संकेत है कि विसंगति-बोध ने सातवें दशक की कविता में बड़ा ज़ोर पकड़ा था। इस सिलसिले में नामवरजी ने प्रो.डब्ल्यू डब्ल्यू राब्सन और डॉ. एफ.आर. लीविस के विचारों की चर्चा की है।

नयी कविता में ईमानदारी का ही एक रूप है- अस्मिता की खोज (Crisis of Identity)। सबसे पहले अमेरिकी मनोवैज्ञानिकों ने इसे लोकप्रिय बनाया था। अज्ञेय जी की प्रायः सभी रचनाओं में इसका स्पष्ट प्रभाव है। अकवितावादियों ने इसे वेद मंत्र के समान स्वीकार किया। नामवर जी ने इस आत्मवादी -ईमान्दारी का खंडन करते हुए नई कविता में वस्तुनिष्ठ मार्क्सवादी ईमानदारी को ग्रहण करना अनिवार्य माना। यहाँ वे स्राविंस्की के ईमानदारी एक अनिवार्य (शर्त) है- वाला विचार से प्रभावित हैं।

दूसरे खंड के अंतिम अध्याय में नामवरजी ने परिवेश और मूल्य पर चर्चा की है। यहाँ नामवग्जी ने विचारों की छानबीन की है। उनके विचार में अभिनव गुप्त और राजशेखर द्वारा निरूपित प्रतिभास सिद्धांत की काफ़ी समानता रिचर्डस् द्वारा निरूपित वस्तु निर्देश अर्थ (Refrential Meaning) से भिन्न भावात्मक अर्थ (Emotiva Meaning) से है। इस प्रकार रिचर्डस् ने द्वितीय वास्तविकता के रूप में काव्य सत्ता को स्वीकृति दी है। इस प्रकार रिचड्र्स तथा इलियट के काव्यशास्त्र को डॉ.नामवर सिंह शुद्ध कविता का ही काव्यशास्त्र मानते हैं। इस दृष्टि की आलोचना करते हुए नई समीक्षा के क्लीन्थ ब्रूक्स ने विडंबना (Irony) पर आधारित 'आवयविक काव्य सिद्धांत के द्वारा आस्था की समस्या का हल खोजना चाहा है। डॉ.एफ.आर लीविस ने 'नैतिक बोध' में साहित्यिक तथा साहित्येतर दोनों प्रकार के मूल्यों को समेट लिया। यह भी स्पष्ट किया कि 'शुद्ध साहित्यिक मूल्यों' तथा कविता के स्वायत्त संसार की चर्चा भ्रामक है। मुक्तिबोध के विचार में- कला का अपना स्वायत्त स्वतंत्र राज्य है, किंतु उसकी यह स्वायत्तता और स्वतंत्रता सापेक्ष्य है। ऐसी स्थिति में काव्य-मूल्यों का निर्माण काव्य-कृति और परिवेश को ध्यान में रखकर ही किया जा सकता है।

संक्षेप में नामवरजी ने देश-विदेश से काव्य-प्रतिमानों की वस्तुनिष्ठता को पाने का आग्रह रखा है। संसार भर इसी प्रयत्न का परिणाम है। मुक्तिबोध को केन्द्र में रखकर काव्य-प्रतिमानों की चर्चा में प्रगतिशीलता सच्चे अर्थों में सुरक्षित है। इस प्रकार वे संकुचित दृष्टि के मार्क्सवादी आलोचक न होकर कविता के काव्य-मूल्यों पर विचार वाले ईमानदार आलोचक हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेय्यम : अनुष्ठानिक कला रूप

रोहित जैन

दक्षिण भारत के केरल राज्य को विभिन्न कला-सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाज़ों और लोक अनुष्ठानों के लिए धनवान माना जाता है। यह राज्य सहस्त्र वर्षों पुरानी सांस्कृतिक विरासत को न केवल जीवित रखे हुए है वरन् वर्तमान समय में भी अपनी पारंपरिकता को उत्साह के साथ आगे बढ़ा रहा है। इसी पारंपरिकता में यहाँ अनेक कला-रूपों का उद्‌भव और विकास हुआ। यहाँ के विभिन्न तट कला-रूपों के प्रस्फुटन और विकास के साक्षी माने जाते हैं। इन कला रूपों[१] को हम चार प्रमुख वर्गों में विभाजित कर समझ सकते हैं।

प्रदर्शन कला
केरल की अनुष्ठानिक कला
युद्ध कला
केरल की लोक कला

केरल की सांस्कृतिक विरासत को समेटे हुए यह विभिन्न कला रूप इस प्रदेश की अप्रतिम पहचान हैं। केरल के विभिन्न अनुष्ठानिक कला रूपों में उत्तरी मालाबार क्षेत्र के प्रसिद्ध कला रूप 'तेय्यम' का प्रमुख स्थान है। तेय्यम लगभग ८०० वर्ष पुराना एक आध्यात्मिक या पूजा कला रूप है। डॉ.सूर्या बोस के अनुसार, "देवी या देव का तद्‌भव रूप है 'तेय्यम'। यहाँ दैवी-शक्ति का भास प्रतीत होता है।"[२] वहीं व्यापक अर्थ में तेय्यम का शाब्दिक अर्थ है- 'ईश्वर का अवतार' इसीलिए इसे देवता का उत्सव भी कहा जाता है। नंदुल.एस अपने वर्चुअल आलेख में तेय्यम के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते है, "It is a ritualistic performance blending the art of dance, craft making, literature, history and the emotions of society."[३]

तेय्यम उत्तरी केरल के कन्नूर, कोझिकोड, कासरगोड, नीलेश्वरम आदि जिलों का लोकप्रिय अनुष्ठानिक कला-रूप है। यह सामाजिक समानता को बढ़ावा देने वाला अनुष्ठानिक उत्सव है, जिसमें सभी वर्गों और जनजातियों के लोगों को धार्मिक भागीदारी के साथ जोड़ा जाता है। तेय्यम की उत्पत्ति के संबंध में मान्यता है कि कोलाथिरी नामक राजा के शासन-काल में करिवेलूर के मनक्कटानन गुरुक्कल नामक महान कलाकार ने तेय्यम की कुछ शैलियाँ विकसित की थीं। तेय्यम नृत्य की समय-अवधि मलयाळम माह 'तुलाम' (अक्टूबर-नवंबर) के दसवें दिन से आरंभ होती है और मई के अंत तक समाप्त हो जाती

१. https:www.keralatourism.org/hindi/artforms/ केरल के कला रूप।
२. उत्तरी केरल के पुलयर और तेय्यम, डॉ.सूर्या बोस, समन्वय दक्षिण, अप्रैल-जून २०२०, पृ.सं.९७
३. https://spaindustrialdesign.wordpress.com/2020/12/16/theyyam-mudi-craft/

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। तेय्यम की सामाजिकता और उसकी समय अवधि के विषय में भवानी चीरत अपनी पुस्तक में लिखती है, "The Theyyam season begins after the harvest in October and continues till April-May, ending before the onset of the monsoons. It is a time for thanksgiving and for propitiating the Gods and ancestors for the bountiful harvest."[१]

तेय्यम के पीछे सामाजिक मान्यता है कि इसमें अधिकांशतः पुरुष वर्ग देवताओं का रूप धारण करते हैं और देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नृत्य करते हैं इससे देवता समाज को समृद्धि और शांति प्रदान करते हैं। तेय्यम के विषय स्थानीय मिथकों और क्षेत्रीय महत्व के पात्रों की लोक-कथाओं से विकसित होते हैं। इसी के साथ इसे हिंदू पौराणिक कथाओं से प्रेरित भी माना जाता है। विभिन्न समुदायों के मिथकों और विश्वासों में अंतर के चलते, तेय्यम की विभिन्न शैलियाँ प्रचलित हैं; जिन्हें विभिन्न समुदायों द्वारा पवित्र कुंजों तथा अन्य स्थानों पर प्रस्तुत किया जाता है। तेय्यम का प्रदर्शन वर्ष में एक बार होता है और इसे 'कळियाट्टम' कहते हैं। तेय्यम के कलाकार विभिन्न सामाजिक समुदायों से आते हैं जिनमें वण्णान, मलयन, माविलन, वेलन, चेस्वन, चिंकत्तान, कोप्पालन, पुलयन, कलनाडी, पेरुमण्णान, तुलुवेलन, अंजूट्टान और मून्नूट्टान जैसे समुदाय प्रमुख हैं। प्रत्येक समुदाय द्वारा प्रस्तुत तेय्यम की नृत्य-शैली, संगीत, चेहरे तथा शरीर को रंग करने के तरीके और धारण किए जाने वाले वस्त्राभूषण आदि में उनकी परंपराओं के अनुसार अंतर होता है। इस प्रकार तेय्यम के विविध रूप देखने को मिलते हैं। तेय्यम के विविध रूपों में सबसे लोकप्रिय हैं; मुत्तप्पन, ती चामुण्डी, कण्डाकर्णन, गुळिकन, विष्णुमूर्ति, मुच्छिलोट भगवति आदि। इनमें से ती चामुण्डी अत्यंत जोखिमी माना जाता है क्योंकि इस रूप में, तेय्यम आग अँगारों में नृत्य करके देवी माहौल बनाता है। यह कला अनुष्ठान प्रकृति से गहरे तक जुड़ा हुआ है। तेय्यम लिए उपयोग होने वाली सामग्री; शिरोभूषण से लेकर चेहरे तथा शरीर के श्रृंगार में प्रयोग होने वाले रंग अपने आस-पास की प्रकृति से ही प्राप्त किए जाते है।

तेय्यम के सबसे महत्वपूर्ण और आकर्षक भाग हैं; उसका मुखतेजुत्तु (चहरे का श्रृंगार), शिरोभूषण (मुडी) और उसकी वस्त्रसज्जा। कलाकार की वेषभूषा, सजावटी और रचनात्मक होती है। 'मुखतेजुत्तु' और 'मुडी' तेय्यम के ऐसे दो भाग है जो इसे विश्वसनीयता प्रदान करते हैं। यह दोनों बहुत ही बारीक और कठिन कलाएँ हैं। तेय्यम में चेहरे पर होनेवाली चित्रकारी को 'मुखत्तेजुत्तु' नाम से जाना जाता है। चेहरे का शृंगार प्राकृतिक सामग्री जैसे चंदन, हल्दी, कुमकुम, चावल का आटा, पत्ती के अर्क आदि के द्वारा किया जाता है। मुखत्तेजुत्तु की सूक्ष्म बारीक चित्रकारी और रचनात्कमता के माध्यम से ही तेय्यम को विशिष्ट भावात्मक अभिव्यक्ति मिलती है। के.के.एन.कुनीप अपने लेख में मुखत्तेजुत्तु के विभिन्न प्रकारों को बताते हुए लिखते हैं कि "There are different patterns of face painting. Some of these patterns are called Vairudalum, Kattaram, Kozhipuspam, Kotumpurikam and Prakeezhthu. Mostly primary colours and secondary colours like black and white

१. Theyyam : The Other Gods - Bhawani Cheerath; Stark World Publishing Private Ltd. Page.No.-80

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

applied with contrast for face painting. It had effected certain stylization also."[1] मुखतेजुत्तु में चेहरे पर चित्रकारी देवताओं के गुणों के अनुरूप होती है, जिससे कलाकार को देवी-देवताओं जैसे पौराणिक आकृतियों की भव्यता को व्यक्त करने में मदद मिलती है। शिरोभूषण अर्थात् मुडी; यह वह हिस्सा है जो सिर पर पहना जाता है। तेय्यम कलाकारों के शिरोभूषण को 'मुडी' के नाम से जाना जाता है। इसे हम मुखौटा के अर्थ में समझ सकते हैं। मुडी तेय्यम के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक है और यह एक विशेष क्षेत्र के हस्तशिल्प का प्रतिनिधित्व करता है। तेय्यम में मुडी की व्याख्या 'ईश्वरीय अंश' के रूप में की जाती है। यह अत्यंत सजावटी होने के कारण कभी-कभी भयंकर दिखाई देती है। नंदुल.एस. अपने ब्लॉग में मुडी के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि "It is believed that the God reincarnates into the theyyakaran when he wears the theyyam mudi and sees himself in the mirror."[2] तेय्यम की मुडी के विभिन्न रूप होते हैं। इसकी ऊँचाई लगभग आधा फीट से लेकर बीस फीट के बीच होती है। इसकी संरचना अत्यंत जटिल और विस्तृत होती है; जिसे बनाने में बहुत अधिक श्रम और समय लगता है। मुडी का निर्माण मुख्य रूप से ताड़ के पत्तों, सुपारी के पेड़ों, फूलों, रेशमी कपड़ों, धातु और अन्य प्राकृतिक सामग्री से होता है। मुडी के निर्माण का प्रमुख प्राकृतिक घटक नारियल के पत्ते होते हैं। विभिन्न प्रकार की बारीक चित्रकारी इन्हीं पत्तों पर की जाती है; नारियल के पत्तों पर की जाने वाली इस चित्रकारी को 'कुरुत्तोला चारथु' कहा जाता है। इस प्रकार यह चित्रकारी किए हुए पत्ते मुडी के दृश्य-भाग का स्वरूप निर्मित करते हैं। तेय्यम के मुडी निर्माण में प्रयुक्त होने वाले आभूषणों का निर्माण नारियल और सुपारी के पेड़ों की लकड़ियों से होता है। मुडी के निर्माण में पारंपरिक उपकरण जैसे - उळी, वल्ममट्टी, अरनी, अलावट्टम् आदि का उपयोग किया जाता है। तेय्यम मुडी के निर्माण की कला को रीति-रिवाजों और परंपराओं के रूप में संरक्षित किया जाता है; जिससे एक ओर कला का विकास होता है तो वहीं दूसरी ओर इसे मशीनी युग के बढ़ते आधुनिकीकरण से भी बचाया जाता है। के.के.एन.कुन्नीप अपने लेख में इस संबंध में लिखते हैं कि "The indigenous Teyyam cult under the influence of the great classical Indian tradition incorporated new ideals and legends. However, its form and content did not change very much."[3]

तेय्यम मुडी के विभिन्न भागों का निर्माण व्यापक स्तर पर नहीं होता है बल्कि अधिकांशतः मुडी का निर्माण सात पेरुवन्नुम (वह समुदाय जो तेय्यम की मुडी का निर्माण करता है) और चार आश्रयी (बढ़ई) मिलकर करते हैं। तेय्यम में इन संख्याओं का क्या आर्थ है, इसके विषय में जानकारी नहीं मिली है लेकिन कुछ स्रोतों से ज्ञात हुआ कि तेय्यम मुडी के निर्माण में कलाकार कम से कम सामग्री के उपयोग द्वारा बेहतर से बेहतर कार्य करने की कोशिश करते हैं।

१. A Panorama of Indian Culture, edited by K.K.Kusuman; (Teyyam-A vanishing Ritual Dance of Kerala - K.K.N.Kunip); Mittal Publication, New Delhi, Page No.129

२. https://spaindustrialdesign.wordpress.com/2020/12/16/theyyam-mudi-craft/

३. A Panorama of Indian Culture, edited by K.K.Kusuman; (Teyyam-A vanishing Ritual Dance of Kerala - K.K.N.Kunip); Mittal Publication, New Delhi, Page No.126

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुडी की संरचना में ऊपरी हिस्से को 'कलशा' कहा जाता है, जो तेय्यम कलाकार के अनुसार लंबा या छोटा हो सकता है। मुडी का यह हिस्सा दिव्य भाग की तरह प्रतीत होता है। मुडी के अन्य भागों में 'कर्णपदम' (कान की संरचना) और आधार संरचना की सजावट शामिल है। इसी के साथ मुडी को लाल रेशमी कपड़े से चारों ओर से ढका जाता है, जिससे तैयार की गई आधार संरचना को सुदृढ़ किया जा सकें। मुडी को सिर पर रखने की प्रक्रिया को 'मुडियेट्टु' कहा जाता है। मुडियेट्टु के उपरांत मान्यता है कि तेय्यम चरित्र, दैवीय शरीर में प्रवेश कर जाता है और इसे परकाया प्रवेश की तरह देखा जाता है। तेय्यम मुडी को एक दिव्य इकाई माना जाता है। तेय्यम अनुष्ठान पूर्ण होने के उपरांत 'कळियाट्टम' आशीर्वाद के रूप में अपने मुडी व शृंगार से हल्दी लगे हुए फूल और पत्ते आम लोगों को देते हैं। वह एक तरह से दिव्य मुडी के हिस्सों को लोगों के बीच ही वितरित कर देते हैं और आम-जन इन्हें समृद्धि का प्रतीक मानकर ग्रहण करते हैं।

पहले के समय में मुडी का निर्माण कुछ पारंपरिक लोगों द्वारा ही किया जाता था; यह पारंपरिक लोग पूर्ण अनुष्ठानिक ढंग से मुडी को प्राकृतिक अवयवों द्वारा निर्मित करते थे। लेकिन समय के साथ बदलते इस मशीनी युग ने दिव्य अनुष्ठानिक कला रुप को प्रभावित किया है और आजकल के युवा प्राकृतिक के बनिस्बत मशीन-निर्मित अवयवों को मुडी के निर्माण में प्रयोग करने लगे हैं। मुडी शिल्प के प्रमुख केंद्र कन्नूर जिले के पय्यन्नूर, अंडलूर आदि स्थान हैं। शिरोभूषण या मुडी को इनकी विविधता के आधार पर कतिपय विशेष नामों से पहचाना जाता है; उनमें ओलामुडी, इलामुडी, पालमुडी, तोप्पि चमयम, वट्टामुडी, नीलामुडी, पीलिमुडी, पुरत्तट्टु, ओमकारा मुडी आदि प्रमुख हैं। तेय्यम के रूप और वस्त्र सज्जा की विविधता सीधे-सीधे यहाँ की क्षेत्रीय मूर्ति-कला से प्रभावित है।

तेय्यम के प्रदर्शन में प्रकृति और प्राकृतिक तत्वों का बहुत अधिक महत्व है। पदर्शन से संबंधित विभिन्न प्रकार के कार्यों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केवल प्राकृतिक सामग्री का उपयोग ही परंपरा से चला आ रहा है। जैसे -मुडी आदि के निर्माण के समय जो टेंट बनाया जाता है, वह ताड़ के पत्तों का होता है। तेय्यम प्रदर्शन के समय सभी नर्तकों द्वारा एक साथ अनुष्ठान गीत का पाठ किया जाता है और मंदिर के नाम का उल्लेख किया जाता है। पृष्ठभूमि में लोक-संगीत, वाद्ययंत्र जैसे 'चेंड़ा', 'तुटी', 'कुज़ल' और 'वेक्री' लय में बजाए जाते हैं। इसी संबंध में विद्वान के.के.एन. कुनीप अपने लेख में लिखते हैं "Teyyam performance is a combination of playing of musical instruments, vocal recitation, dance and strange make-up and costumes. The Teyyam ritualistic observations make it one of the fascinating theatrical arts of India."[१]

तेय्यम प्रदर्शन से संबंधित प्रत्येक कला में निपुणता हासिल करने में लगभग आठ से दस वर्षों की अवधि लगती है। तेय्यम नृत्य से संबंधित शिक्षण-प्रशिक्षण आज भी गुरुकुल मॉडल में दिया जाता है, इस प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्रशिक्षु ढोल वादक और मुखतेज्जु कला का भी प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

तेय्यम का उद्देश्य अशिक्षित जनता

१. A Panorama of Indian Culture, edited by K.K.Kusuman; (Teyyam-A vanishing Ritual Dance of Kerala - K.K.N.Kunip); Mittal Publication, New Delhi, Page No.130

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्तिबोध

कवि गजानन माधव मुक्तिबोध

डॉ.जिषा.पी.

एक महान कवि की सार्थकता अपने युग को अर्थ देने से अधिक सार्थक बनाने में है। मुक्तिबोध का काव्य इस चुनौती को स्वीकार करता है तथा अपने युग की भयावहता को पूर्णता के साथ रूपायित करता है। इसलिए कहा जाता है कि मुक्तिबोध अपने युग के सफल कवि नहीं, वरन् सार्थक कवि हैं।

मुक्तिबोध की आरंभिक कविताओं का संकलन 'तारसप्तक' में प्राप्त होता है जिसमें उनकी सोलह कविताएँ प्रकाशित हुई थीं। नयी कविता के विकास में 'तारसप्तक' के महत्व को नकारा नहीं जा सकता और चूँकि 'तारसप्तक' में मुक्तिबोध की कविताएँ संग्रहीत हैं इसलिए नयी कविता के विकासक्रम में उनका

के बीच हिन्दू पौराणिक कथाओं और विश्वासों का प्रचार करना है। तेय्यम को लोकप्रिय अनुष्ठानिक कला रूप बनाने में उत्तरी केरल के लोगों द्वारा इसका निरंतर प्रदर्शन और संरक्षण मददगार रहा है। के.के.एन.कुनीप अपने लेख में इस संबंध में लिखते हैं कि "The folk theatre like the Teyyam is mainly intended to propagate religion, Hindu mythology and belief even among the uneducated masses. There the art form is only a medium of communication and cult centre where the art form is performed is a sacred centre of social organisation. The continued patronage of the masses makes it a popular art."[१]

आज के समय में हमें ज़रूरत है कि हम इस पारंपरिक सांस्कृतिक दिव्य अनुष्ठानिक कला नृत्य को, उसी पारंपरिक परिचय के साथ जानें; जिसे हमारे पूर्वज हज़ारों वर्षों से हमारे लिए संरक्षित करते आए हैं। तेय्यम के विभिन्न अवयवों को निर्मित करने वाले कलाकार 'टी.वी. प्रभाकरन' अपने एक साक्षात्कार में कहते हैं, "Many skill sets associated with this craft are disappearing, unfortunately. We have only very fewer people in this profession now."[२]

यह परंपराएँ और संस्कृतियाँ हमारे इतिहास की जीवित विरासत हैं; जिन्हें समृद्ध करना ही हमारा कर्तव्य है।

शोधार्थी
हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड।

१. A Panorama of Indian Culture, edited by K.K.Kusuman; (Teyyam-A vanishing Ritual Dance of Kerala - K.K.N.Kunip); Mittal Publication, New Delhi, Page No.134

२. https://medium.com/@tyndistravelindia/crafting-the-divine-accessories-37f09e5da8b8

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महत्व भी स्वयंसिद्ध है। अतः नयी कविता की पृष्ठभूमि में मुक्तिबोध की भूमिका का अध्ययन उनके काव्य को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

कथ्य के स्तर पर तो उनकी कविताओं में प्रगतिशील चेतना ही मुखर है जिसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति हमें 'मृत्यु और कवि', 'पूँजीवादी समाज के प्रति', 'नाश देवता', 'मैं उनका ही होता' आदि कविताओं में मिलती है। प्रगतिशीलता के साथ -ही-साथ उनमें व्यक्ति परवशता, एकान्तिकता, व्यक्ति की क्षुद्रता, क्षण का महत्व आदि की प्रवृत्तियाँ भी घुली मिली हैं तथा जिनका पूर्ण विकास अन्य नवीन प्रवृत्तियों के साथ 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' की कविताओं में मिलता है।

'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के प्रकाशन से पूर्व उनकी 'कामयानी: एक पुनर्विचार', 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध' तथा 'एक साहित्यिक की डायरी' आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं। इन पुस्तकों से मुक्तिबोध के प्रखर समीक्षक और विचारक रूप की स्थापना हिन्दी जगत् में हुई। नयी कविता के क्षेत्र में उन्होंने सर्जक कलाकार के साथ ही-साथ सहृदय समीक्षक-विचारक की भी भूमिका को निभाया तथा नयी कविता के सौन्दर्यशास्त्र को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुक्तिबोध की काव्य-संवेदना का प्रसार सामान्य से सामान्य व्यक्ति की वेदना को छूता हुआ आगे बढ़ता है। सामान्य जन के प्रति यही लगाव उन्हें प्रेमचन्द व निराला की मानवतावादी-धारा से जोड देता है। दूसरों की वेदना से महानुभूति रखते हुए उनके कष्टों को दूर करने केलिए तत्पर मुक्तिबोध इसलिए सत्-चित् वेदना के कवि कहे जाते हैं। उनकी काव्य-संवेदना के मूल में 'व्यक्ति' न होकर ऐसा 'मानव' है जो निरन्तर संघर्षरत है।

उनकी कविताओं का केन्द्रीय - कथ्य मध्यवर्गीय व्यक्ति के आदर्श और यथार्थ में होनेवाला संघर्ष ही है। निम्न मध्य-वर्ग जो होना चाहता है तथा जो है, इसी का द्वन्द्व उनकी अनेक कविताओं में मुखरित हुआ है। वे अपनी कविताओं में इस वर्ग की अवसरवादिता और सुविधाभोग की लालसा को खोल दिखाते हैं।

कुछ विद्वान आलोचकों ने उनकी कविताओं को 'आत्मग्रस्त कवि की कविताएँ' कहा है। उन पर प्रगतिवादी, रहस्यवादी, अस्तित्ववादी प्रभावों को खोजकर उन्हें एक 'वादी' कवि सिद्ध करने का भी प्रयास किया गया है। किन्तु उनके काव्य का सम्यक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी काव्य-संवेदना को किन्हीं निश्चित खानों में बाँटकर नहीं देखा जा सकता। मुक्तिबोध का आग्रह सदैव समग्रता की ओर रहा है। अतः उनके काव्य का अध्ययन -विश्लेषण भी समग्रता के आधार पर करना चाहिए और जब हम उनकी काव्य-संवेदना का समग्र रुप से अध्ययन करते हैं तो हमें उनकी कविताएँ रहस्यात्मक तो लगती हैं, पर रहस्यवादी नहीं। इस तरह उनके काव्य में लक्षित होनेवाले कतिपय अन्तर्विरोध भी उनकी काव्य-संवेदना की शक्ति बन जाते हैं।

सफल कवि वही होता है जो अपनी काव्यानुभूति के अनुरुप भाषा और शिल्प का निर्माण करने में सक्षम हो। इस दृष्टि से भी वे एक सफल कवि हैं। उनकी भाषिक -संरचना काव्यानुभूति के अनुरुप ही विकसित हुई है। काव्य-संवेदना की सशक्त व सार्थक अभिव्यक्ति के लिए मुक्तिबोध अन्य भाषाओं से शब्द

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रहण करने में संकोच नहीं दिखाते। शब्दों में मितव्ययता और सघनता लाने के लिए मुक्तिबोध मुहावरों का प्रयोग भी करते हैं। उनकी कविताओं में बिम्बों तथा प्रतीकों का निर्बाध तथा मौलिक प्रयोग हुआ है।

मुक्तिबोध की कविताओं में आकस्मिकता के योग के कारण एक विलक्षण नाट्यात्मक-सौन्दर्य का समावेश हो गया है। यह नाट्यात्मकता उनकी कई लंबी कविताओं की विशिष्टता है। 'अंधेरे में' इसका सशक्ततम उदाहरण है तथा उसकी तुलना इसी आधार पर निराला की 'राम की शक्तिपूजा' से की जाती है।

मुक्तिबोध अपनी कविताओं में किसी उद्दीप्त भावनात्मक क्षण की अभिव्यक्ति नहीं करते वरन् उनकी कविताओं में चिन्तन-परता के कारण ही उनकी कविताएँ अत्यंत लंबी हो गयी हैं तथा जो अधूरी प्रतीत होती हैं। वैसे स्वयं वे कविता को कभी भी खत्म हुआ नहीं मानते हैं। क्योंकि उनके अनुसार वह 'आवेग-त्वरित काल यात्री' है।

उनकी कविताओं का विधान फैण्टेसी का विधान है। वे जिस कटु यथार्थ को अपनी कविताओं में प्रस्तुत करते हैं उसकी अभिव्यक्ति स्वप्न-कथा के माध्यम से ही संभव थी। 'अंधेरे में' तथा 'ब्रह्मराक्षस' उनकी सफलतम 'फैण्टेसी' मानी जाती हैं। 'अंधेरे में' की फैण्टेसी प्याज के छिलके की तरह पर्त-दर-पर्त खुलती जाती है और युग का भयानक यथार्थ साक्षात् सामने प्रकट होता जाता है।

समग्रतः मुक्तिबोध नयी कविता के सर्वाधिक चर्चित कृति -व्यक्तित्व हैं। उनकी काव्य-संवेदना अपेक्षाकृत अधिक जागरूक और संयमित है वे अपनी संवेदनात्मक प्रतिक्रियाओं को विवेक द्वारा संयोजित करते हैं। आत्म-मंथन के तीव्र प्रवाह में पड़कर वे अनेक भाव-रत्न निकाल लाते हैं। उनकी कविताएँ ऐसे आइने के समान हैं जिनमें कवि के आत्म -संघर्ष के साथ-साथ युग का समग्र यथार्थ भी प्रतिबिम्बित हुआ है।

मुक्तिबोध का काव्य मूल्यांकन नहीं माँगता, बहस माँगता है, गतिमान विचारों की चर्चा-परिचर्चा चाहता है, क्योंकि उनके अनुसार यथार्थ गतिमान है, उस यथार्थ को व्यक्त करनेवाली कविता भी सतत् विकासमान है। इसलिए वे कविता को कभी पूर्ण हुआ नहीं मानते। जो वस्तु पूर्ण नहीं, अपूर्ण है, तब उसका मूल्यांकन भी अधूरा ही होगा।

अतः मुक्तिबोध का समूचा काव्य जनसामान्य की संवेदनाओं से स्पंदित है। उनके संपूर्ण काव्य में आम आदमी के प्रति अनन्य आस्था अभिव्यक्त हुई है। वे जीवन से पलायन करने में नहीं वरन् समस्याओं से जूझने में विश्वास रखते थे। उनका काव्य, संघर्ष का काव्य है, जन जागरण का काव्य है। उनकी कविता आम आदमी के सत्य और यथार्थ का आईना है जो निरंतर सोचने के लिए हमें प्रेरित करती है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

१. मुक्तिबोध रचनावली, नेमिचंद्र जैन।

२. मुक्तिबोध की काव्य-सृष्टि, सुरेश ऋतुपर्ण।

३. गजानन माधव मुक्तिबोध, लक्ष्मण दत्त गौतम।

प्रकाश निलयम,
पाळयमकुन्नु.पी.ओ.,
वर्कला, केरल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'केक' अधखिली पंखुडियों का जीवनसाक्ष्य

असगर वजाहत

डॉ.जोयिस टोम

संक्षेप

ख्यातिप्राप्त लेखक असगर वजाहत की 'केक' का आस्वादन है यह आलेख। उत्तराधुनिकता के समकालीन दौर में अपनी हस्ती स्थापित करने केलिए वेचैन शिक्षित युवा पीढ़ी के आंतरिक संघर्षों एवं बंजर मुस्कुराहटों की दस्तावेज़ है यह कहानी। कहानी में 'केक' अधूरे मनसूबों का प्रतीक है जिसकी यादों में 'डेविड साहब' अपना गुजरा हुआ यौवन काटता है। कथावाचक में वह अपनी ही असफलता को देखता है और हो सके तो उस महा नगर छोड़कर जाने का आह्वान करता है। लेकिन अपनी बची-खुची ज़िंदगी को किसी न किसी तरह आगे धकेलना कथावाचक की नियति बनती है जहाँ खोखली बातें रटना ही स्वत्व का आधार है। 'केक' वाकई सड़े हुए अंडों से बनी शिक्षित युवा पीढ़ी की ज़िंदगी है।

कहानी लिखना अपने आप में एक कला है जो कुछ उसूलों को अपने सीने से बाँधने केलिए कहानीकार को मज़बूर करती है। स्वयं कहानी साम्राट होने के बावजूद प्रेमचंद को अपनी कहानी 'सवा सेर गेहूँ' के अंत में अपनी लेखकीय हस्तक्षेप से व्यक्त करना पड़ा कि "वह कहानी 'कपोलकल्पित' नहीं है बल्कि सत्य घटना है। ऐसे लोग दुनिया में मौजूद हैं।" इसके अलावा पात्र परिकल्पना से अपने मंतव्य को दिखाना प्रेमचन्द ने उचित नहीं समझा है। उनके अंतिम दौर की कहानियाँ जैसे 'कफन' और 'पूस की रात' में भी विद्रोह केवल 'शंकर' 'घीसू-माधवों' की निस्संग मनस्थिति तक सीमित रहता है। उन्होंने समस्या का अंकन किया। उसका समाधान ढूँढ़ना प्रेमचन्द की या अन्य साहित्यकारों की सीमा से परे है। वैसे साहित्यकार होने का मतलब ब्रह्माण्ड को उसकी समग्रता से अपने भीतर समाहित करना नहीं है। समस्या का निपटारा या निष्कासन व्यक्ति एवं समाज-सापेक्ष है। असगर वज़ाहत ने भी अपनी कहानियों में इसी आदर्श का पालन किया है। असगर वज़ाहत की 'केक' कहानी अपने कथ्य और शिल्प की वजह से अत्यंत निराली है। कहानी महानगरीय जीवन संघर्ष की गाथा है। लेकिन इसका नाम 'केक' रखा गया है। किराये का मकान, दो वक्त की सूखी रोटी और ढेर सारी नाकामियों की कहानी केलिए 'केक' शब्द की संज्ञा की परिकल्पना काफ़ी बेतुकी है। लेकिन वह बेतुकीपन ही कहानी की जान है। क्योंकि कहानी के प्रमुख पात्र डेविड साहब की अस्मिता और 'केक' शब्द की बेतुकीपन परस्पर पूरक हैं। कहानी डेविड साहब के 'बर्थ डे' के चक्कर में बनाए गए एक 'केक' के संदर्भ में बुनी गयी है। डेविड साहब उसे अपनी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा 'एचिवमेंट' मानता है फिर भी उसका खर्चा आपस में बाँटने के बारे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोचता है। उस केक को बनाने केलिए डेविड साहब ने क्या कुछ नहीं किया। कहानी में इसका वर्णन भी काफ़ी लंबा-चौड़ा है। "पहले पूरा बजट तैयार कर लिया गया था। सब खर्च जोड़कर कुल सत्तर रुपये होते थे। पहली तारीख को डेविड साहब मैदा, शक्कर और मेवा लेने खारी बावली गये थे। डेविड साहब के कई दोस्तों ने दरियागंज के एक बेकर की तारीफ़ की तो वह उससे एक दिन बात करने गए, बिलकुल उसी तरह जैसे दो देशों के प्रधानमंत्री गंभीर समस्याओं पर बातचीत करते हैं।" डेविड साहब ने उसके सामने एक ऐसा प्रश्न रख दिया कि वह लाजवाब हो गया- "अगर तुमने सारा सामान केक में न डाला और कुछ बचा लिया तो मुझे कैसे पता चलेगा?" इस समस्या का समाधान भी उन्होंने खुद खोज लिया। कोई ऐसा आदमी मिले जो बेकर के पास उस समय तक बैठा रहे, जब तक कि केक बनकर तैयार न हो जाए। डेविड साहब को मिसेज़ डिसूज़ा ने इस काम केलिए अपने आप को 'ऑफर किया। मगर वास्तव में डेविड साहब को मिसेज़ डिसूज़ा पर भी एतबार नहीं था।....जब पूरी दिल्ली में 'मोतबिर' आदमी नहीं मिला तो डेविड साहब ने एक दिन की छुट्‌टी ले ली।" कथावाचक ने इस काम में कोई रुचि नहीं दिखाई थी, इसलिए उन दिनों उससे नाराज़ थे और पीठ पीछे उन्होंने मिसेज़ डिसूज़ा से कई बार कहा कि जानता ही नहीं केक क्या होता है।

'केक' बर्थ डे से एक दिन पहले आ गया था। अब उसे चूहों से बचाने केलिए कथावाचक को अपने टीन के बक्से से कपड़े निकालकर डेविड साहब को देना पड़ा।

डेविड़ साहब सीधा कॉलेज से निकलकर उस शहर में आ गया था, राजधानी जीतने के ख्वाहिश लिए। लेकिन पिछले पच्चीस सालों से बासू के यहाँ प्रूफरीडरी कर रहा है। उसकी कुल आमदनी दो सौ पचहत्तर रुपए इक्कीस पैसे हैं। उसमें से पचास रुपए कमरे के लिए और पचपन रुपए सुबह के और रात के खाने के लिए देना पड़ता है जो केवल मिसेज़ डिसूज़ा के लिए 'अंग्रेज़ी खाना' है। दोपहर का खाना वे हमेशा 'गोल' करते रहते हैं। डेविड़ साहब की मानें तो वह भूख को मनाने में माहिर है- "भूख जब ज़ोर से लगती है तो ऐसा लगता है जैसे बिल्लियाँ लड़ रही हों। फिर पेट में हलका-सा दर्द शुरू होता है जो शूरू में मीठा लगता है। फिर दर्द तेज़ हो जाता है। उस समय यदि आप तीन चार गिलास पानी पी लें तो पेट कुछ समय के लिए शांत हो जाएगा और आप दो-एक घंटा कोई भी काम कर सकते हैं"। भूख का इतना मीठा तथा आधिकारिक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। डेविड़ साहब के प्रिय शब्दों की सूची काफी दिलचस्प है - 'बिच', 'क्रूक', 'नॉन सेंस', 'बंगलिंग', 'पब्लिक ट्रायल', 'एक्सप्लोइटेशन', 'क्लास स्ट्रागल' आदि-आदि। अगर उनको मौका दिया जाय तो 'अट ए टाइम पाँच सौ लोगों को गोली से उडाकर हालात ठीक करना' उसे आता है। अपने तंगहाली का समाधान भी उसके पास है। बस एक मुर्गीखाना खोलना फिर आराम ही आराम - "सिर्फ दो हज़ार रुपए से शुरू करे कोई। चार सौ मुर्गियों से शानदार काम चालू हो सकता है। चार सौ अंडे रोज़ का मतलब है कम-से-कम सौ रुपए रोज़। एक महीने में तीन हज़ार रुपए और एक साल में छत्तीस हज़ार रुपए।....मैं कहता हूँ चार साल में लखपति। फिर अंडे-मुर्गीखाने का आराम अलग। रोज़ एक मुर्गी काटिए। बीस अंडों की पुडिंग बनाइए"।

डेविड़ साहब का 'प्लैन' तो काफी उम्दा है लेकिन अगर ध्यान से देखें तो पता चलता है कि इसके पीछे की प्रेरणा काफ़ी पुरानी है। पच्चीस साल पहले उसके 'कॉलेज-फेलो'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने इसी तरह मुर्गी खाना खोलकर कामयाबी पायी है जो फिलहाल डेविड साहब की बस की बात नहीं है। फिर भी डेविड साहब इसी तरह अपने आप को उस मुर्गीखाने में बन्द कर के उस शहर का एक हिस्सा होने का अपना सपना पूरा करते हैं।

बचपन से डेविड साहब को दो चीज़ें पसन्द रही हैं - जॉली और केक। जॉली की शादी किसी कैप्टन से हो गई, तो वे धीरे-धीरे उसे भूलते गये। पर 'केक' की पसंदगी ज़ारी है। केक के साथ कौन शादी कर सकती है। लेकिन खारी-बावली के कई चक्कर लगाने पर उन्होंने महसूस किया कि केक की भी शादी हो सकती है। अतः केक भी उसके लिए एक विलासिता मात्र रह गई है। फिर भी उसे पसंद करना बंद न कर सके। कभी-कभी मोटे चावल खाते हुए भी 'केक की याद में हस्तमैथुन करता' सा दिखाई देते हैं तो बीच-बीच में जॉली की यादों में अपने पुँसत्व का एहसास कराते रहते हैं।

मिसेज़ डिसूज़ा डेविड साहब के लिए देसी ईसाइयों की कई लड़कियाँ चुनकर हार गई और एक दिन तंग आकर उसने डेविड साहब को मुहल्ले में नामर्द घोषित कर दिया और उनके सामने कपड़े बदलने लगी। लेकिन उनकी नामर्दगी का असली पता कहानी के अंत में डेविस के ही शब्दों से व्यक्त हो जाती है– "मैं शादी कैसे कर लूँ आंटी? दो सौ पचहत्तर रुपए इक्कीस पैसे से एक पेट नहीं भरता। एक और लड़की की जान लेने से क्या फायदा। मेरी ज़िन्दगी तो गुज़र ही जाएगी। मगर मैं यह नहीं चाहता कि मेरे पीछे एक गरीब औरत और दो-तीन प्रूफरीडर छोड़कर मर जाऊँ जो दिन-रात मशीनों की कान फ़ोड देनेवाली आवाज़ में बैठकर आँखें फोडा करें।" इससे बहतर झूठ ही सही नामर्दगी का ऐलान स्वीकारना है।

इसीतरह नाकामी का अवसाद है डेविड साहब। उससे उबरने केलिए वे अपने अतीत की कहानियों को रटते रहते हैं, जिसमें जॉली का भी प्रसंग आता रहता है। इसी सिलसिले में उस पिकनिक पार्टी का ज़िक्र आता है जिसमें 'डेविड बाबा' ने यमुना के स्लोप पर गाडी चाढा दी थी। तजुर्बेदार इस्माइल खाँ को पसीना छूट गया था। खाँ को डॉटकर गाडी से उतार दिया था। सब लड़के और लड़कियाँ उतर गए। अँग्रेज़ लड़कों की हिम्मत छूट गई थी। परंतु जॉली ने उतरने से इंकार कर दिया था। डेविड बाबा ने गाडी स्टार्ट की। दो मिनट सोचा। गियर बदलकर आक्सिलरेटर पर दबाव डाला और गाडी एक फ़र्राटे के साथ ऊपर चढ गयी। इस्माइल खाँ ने ऊपर आकर डेविड बाबा के हाथ चूम लिए थे। वह बडे-बडे अँग्रेज़ अफसरों को गाडी चलाते देख चुका था मगर डेविड बाबा ने कमाल ही कर दिया था। जॉली ने डेविड बाबा को उसी दिन 'किस' देने का प्रामिस किया था। अन्य लोगों की तरह कथावाचक को भी यह बात लफ्फाज़ी लगती है। फिर भी इन बातों को सुनाते समय डेविड साहब की 'बिटरनेस' गायब हो जाती थी। तब वे डेविड साहब नहीं दीपक बाबा लगते हैं। हलकी सी धूल उड़ती है और सीतापुर की सिविल लाइंस पर बनी बड़ी-सी कोठी के फाटक में १९३० की फोर्ड मुड जाती है। फाटक के एक खंभे पर साफ अक्षरों में लिखा हुआ है- 'पीटर जे. डेविड़, डिप्टी कलेक्टर'। कोठी की छत खपरैलों की बनी हुई है। कोठी के चारों ओर कई बीघे का कंपाऊँड है। पीछे आम और संतरे का बाग। दाहिनी तरह टेनीस कोर्ट। कोर्ट की बायीं तरफ बड़ा सा किचन, गार्डन, कोठ़ी के ऊँचे बरामदे में बावर्दी चपरासी ऊँघता हुआ दिखाई पडेगा। अंदर हाल में विक्टोरियन फर्णीचर और छत पर लटकता हुआ, हाथ से खींचने वाला पंखा। दोपहर में पंखा-कूली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंखा खींचते-खींचते ऊँघ जाता है तो मिस्टर पीटर जे.डेविड डिप्टी कलेक्टर अपने विलायती जूतों की ठोकरों से उसके काले बदन पर नीले रंग के फल उगा देते हैं। बाबा लोग टाई बाँधकर खाने के मेज़ पर बैठकर चिकन-सूप पीते हैं। खाना खाने के बाद आइस्क्रीम खाते हैं और ममी-डैडी को 'गुड नाइट' कहकर अपने कमरे में चले जाते हैं। साढे नौ बजे के आस-पास १९३० की फोर्ड गाडी फिर स्टार्ट होती है। अब वह या तो क्लब चली जाती है या किसी देशी रईस की कोठी के अंदर घुसकर आधी रात को डगमगाती हुई लौटती है। इसी तरह डेविड साहब उस महानगर की सडी हुई ज़िन्दगी से ज़्यादा अपने अतीत में और कभी न होने वाले सुन्दर भविष्य में अपने आपको सुरक्षित पाते हैं। 'गाँड के रास्ते उनके अंदर घुस चुकी' उस शहर को बाहर करने की उसकी कोशिश ज़ारी है।

कहानी का दूसरा कथापात्र है मिसेज़ डिसूज़ा जो डेविड साहब और कथावाचक का मकानदार है। मकान का किराया ही उसकी एकमात्र आमदनी है। रहने केलिए पचास रुपए और दो वक्त के खाने के लिए पचपन रुपये वह लेती हैं और घर के दोनों कमरे किराये पर देकर स्वयं रसोई में सोती है। वैसे घर की हालत भी उतनी अच्छी नहीं है। 'पत्थर की छत के नीचे खाने की मेज़ है। जिसके एक पाए की जगह ईंटें लगी हैं। दूसरे पायों को टीन की पट्टियों से जकड कर कीलें ठोंक दी गई हैं। रस्सी, टीन, लोहा, तार और ईंटों के सहारे खड़ी मेज़ पहली नज़र में आदिकालीन मशीन सी लगती है। मेज के ऊपर मिसेज़ डिसूज़ा की सिलाई मशीन रखी है। खाना खाते समय मशीन को उठाकर मेज़ के नीचे रख दिया जाता है खाने के बाद मशीन फिर मेज़ पर आ जाती है। रात में डेविड साहब इसी मेज़ पर बैठकर प्रूफ देखते हैं। फिर भी मिसेज़ डिसूज़ा अपने मकान की खूबी की चर्चा करती है, जिसका सीधा मतलब है किरायेदारों पर रोब डालना। मिसेज़ डिसूज़ा खानों का नाम अँग्रेज़ी में लेती है। रोटी को 'ब्रड' कहती है। दाल को न जाने किस वजह से, वह 'सूप' कहती है। तरकारी को 'बोयल्ड वेजिटबुल्स' कहती है और करेलों को 'होट डिश' कहती है। उन्हें चालीस साल तक के पुराने दाम याद हैं। महीने की पहली तारीख को किराया नहीं मिलता तो उसका 'मूड ओफ' हो जाता है। फिर एकाध दिन मुँह फूला रहेगा। फिर महँगाई के किस्से सुनाने लगेगी। मिसेज़ डिसूज़ा ने डेविड साहब के लिए कई ईसाई लड़कियाँ ढूँढ़ चुकी हैं। यहाँ तक कि अपनी लड़की का और खुद के भी चित्र डेविड साहब की मेज़ पर रखी है जिसे हटाने का अधिकार किरायेदार को कतई नहीं हैं। कथावाचक की राय में लड़की वास्तव में 'कंटाप' है। 'छिनालपना उसके चेहरे से ऐसा टपकता है कि अगर सामने कोई बर्तन रख दे तो दिन में दसियों बार खाली करना पड़े'। पडोसियों के कहने के अनुसार इसी तसवीर को देख-देख डेविड साहब ने शादी करने और बच्चा पैदा करने की क्षमता से हाथ धो लिये हैं। एक अविवाहत आदमी के कमरे में अपनी और अपनी बेटी की तस्वीर रख आनेवाली माँ की मानसिकता की कोई कल्पना कर ही सकता है। डेविड साहब की तरह मिसेज़ डिसूज़ा भी मौके-बेमौके अपनी पुरानी यादों में चली जाती है। वह अक्सर उस ज़मींदार का ज़िक्र ले बैठती है जो जवानी के दिनों में उन पर दिलोजान से आशिक था और उनके अवकाश प्राप्त करने के बाद भी एक दिन पता लगाता हुआ दिल्ली के उसके घर आया था। वह पहला दिन था जब उस मकान के सामने सेकेंड हैंड एंबासडर खडी हुई थी। और डेविड साहब को किचन में सोना पड़ा था। मिसेज़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डिसूज़ा का जीवन अपने किराएदारों की अस्मिता में धँस गई है।

कहानी का तीसरा पात्र कथावाचक स्वयं है जिसके उस महानगर में आये तीन ही साल हुए हैं। कॉलेज से सीधा उस शहर में आया था और अब ढाई सौ रुपयों के लिए घटिया जासूसी उपन्यास लिखा करता है। उसका जीवन अब क्लॉक की सुई की तरह है कहीं से शुरु होकर एक सीमित दायरे की परिक्रमा के बाद वहीं लौटती है जहाँ से यात्रा शुरु हुई। उसके यथार्थ में, "सुबह का दूसरा नाम होता है। जल्दी-जल्दी बिना दूध के कुछ कप। रात के धोये कपडे पर उलटा-सीधा प्रेस। जूते पर पॉलिश। और दिन भर फ्रूफ़ करेक्ट करने के लिए आँखों की मसाज। प्रूफ के पुलिन्दे-करेक्ट किए हुए और प्रेस से आये हुए। फिर करेक्ट किए हुए फिर आये हुए। ज़िन्दगी घटिया किस्म के कागज़ पर छापा प्रूफ़ हो गई है"। घर से बाहर निकलकर जल्दी-जल्दी बस स्टोप की ओर दौडना। एक ही नंबर की बस पकडना और उससे भी घटिया बात कि डेविड साहब की एक-सी बातें सुनता रहना कि "हरी सब्जियों से क्या फायदा है, किस सब्जी में कितना स्टार्च होता है। अंडे और मुर्गी खाते रहो तो अस्सी साल की उम्र में भी लड़का पैदा कर सकते हो"। (वैसे अस्सी साल की उम्र में लड़का पैदा करने की क्या आवश्यकता है। डेविड साहब को लगता है कि यदि ज़िन्दगी इसी तरह चलती रही तो शादी के लिए अस्सी की उम्र तक इंतज़ार करना पडेगा) यह सब झेलना कथावाचक पर आरोपित नियति है। पहले कथावाचक डेविड साहब को 'उल्लू का पट्टा' मानता था लेकिन अब उस जगह सहानुभूति ने ले ली है। उसे मालूम है कि डेविड साहब की उपस्थिति उससे टाली नहीं जा सकती।

फिलहाल अपना शिक्षित होना कथावाचक को एक अभिशाप सा महसूस होता है - "मैं ने कॉलेज पर इतना पढ़ा ही क्यों? इतना और उतना की बात नहीं है मुझे पढ़ना ही नहीं चाहिए था और अब दो साल तक ढाई सौ रुपये की नौकरी करते हुए क्या किया जाता है? मैं क्यों मुस्कुराता और शाँत रहता"? डेविड साहब उससे अक्सर कहते हैं कि उसको गाँव चले जाना चाहिए क्योंकि उसके पास गाँव में थोड़ी सी ज़मीन है जहाँ गेहूँ और धान की फसल होती है। उसको चाहिए कि अपनी खेत के पास एक कच्चा घर बना लें। उसके सामने एक छप्पर डालकर उस पर लौकी की बेल चढ़ा दो। देहात में आराम से एक भैंस पाली जा सकती है। कुछ दिनों बाद मुर्गीखाना खोल सकता है। खाने और रहने की फिक्र नहीं रह जाएगी।" लेकिन डेविड साहब की आज्ञा का पालन करना लेखक के लिए उतना आसान नहीं है। उसकी वह ही जानता है।

कथावाचक के लिए तिवारी कभी अच्छा मालिक नहीं रहा। वह कथावाचक की लिखी हुई हर दूसरी पंक्ति इसलिए काटता है कि वह तिवारी की लिखी हुई नहीं है। प्रत्येक दिन कथावाचक को दफ्तर से इस तरह लौटना पड़ता है जैसे बुरी तरह से मारा गया हो। उसके लिए ज़िन्दगी अब 'लंगडे आदमी की तरह' चलती है और 'अपमान जो महानगर में लोग तफरीहन कर देती है, अब उतने बुरे नहीं लगते हैं, जितने पहले लगते थे।' मगर वहाँ से निकलकर गाँव चले जाने का मतलब है 'एक भूखमरी से निकलकर दूसरी भूखमरी में' फँस जाना। दो साल से दोपहर का खाना गोल करते रहने के पीछे क्या था? नीचे से भैंस के हगने की आवाज़ आती है। एक परिचित गंध फैल जाती है। उस अर्धपरिचित कस्बे की गंध, जिसे कथावाचक अपना घर समझता है। वहाँ उसे बहुत ही कम लोग जानते हैं। उस छोटे से स्टेशन पर यदि वह उतरे तो गाडी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चली जाने के बाद कई लोग उसको घूर कर देखेंगे। उनका डर दूर करने केलिए उसे अपना परिचय देना पडेगा अर्थात् अपने पिता का परिचय देना पडेगा। तब उनके चेहरे पर मुस्कुराहट आएगी और उससे इक्के पर बैठने केलिए कहेंगे। बीस मिनट इक्का चलता रहेगा तो सारी बस्ती समाप्त हो जाएगी। उस पार खेत है जिसका सीधा मतलब है उस पार गरीबी है। इन हकीकतों के सम्मुख डेविड साहब की रटी-रटाई बातों को रोकना वह उचित नहीं समझता है, क्यों कि उसको मालूम है कि डेविड साहब उसका अवश्यंभावी भविष्य है।

कहानी के तीनों पात्रों की अस्मिता एक दूसरे में इस तरह आबद्ध है मानो कोई अनसुलझी उलझन हो। प्रत्येक पात्र दूसरों को अपने से ज्यादा सुरक्षित पाता है जैसे कथावाचक की राय में डेविड साहब मुर्गीखाना या बेकरी खोलकर बच सकता है। डेविड साहब की राय में कथावाचक को गाँव लौटना चाहिए जहाँ उसकी थोड़ी-सी ज़मीन है और मिसेज़ डिसूज़ा को मुर्गीखाना खोल देना चाहिए। मिसेज़ डिसूज़ा डेविड साहब की सारी समस्याओं के समाधान बतौर शादी करने का प्रस्ताव सामने रखती है और अपनी ही लड़की को ऑफर करती है। लेकिन तीनों को अच्छी तरह मालूम है कि रौंदी गई - अपनी जीवन-गाथा को इसी तरह आगे घिसटने के अलावा और कोई चारा नहीं है। हालाँकि बातचीत चालू है इसलिए कि संवाद उनको जीने का एहसास दिलाते हैं। उन्हें पहले से पता है कि आगे कोई क्या बोलने वाला है, फिर भी एक दूसरे को कान देते रहते हैं। उनको मालूम है कि जब कोई बोलता है तो वह श्रोताओं से या श्रोताओं के लिए नहीं, बल्कि अपने आप से या अपने लिए बोलता है।

कहानी में संदर्भानुकूल आये पद-संचालनों की भी अपनी अलग भूमिका है। प्रूफ रीडिंग के लिए चश्मा पहने डेविड साहब के अंदाज़ को यों व्यक्त किया गया है कि "नाक का चश्मा इस तरह फिट किया जैसे बंदूक में गोलियाँ भर ली गई हों।" वैसे भी प्रूफरीडर का हथियार है चश्मा। एक जगह डेविड साहब की पसंदगियों के बारे में बताते हुए लिखा गया है कि "केक की भी शादी हो सकती है।" यानी डेविड साहब की पहली पसंदगी 'जॉली' थी जिसकी शादी एक कैप्टन से हो गयी तो उसकी दूसरी पसंदगी 'केक' भी मात्र एक आडंबर सी रह गयी है। इसलिए उनसे अपनी कल्पना में केक की भी शादी कराके छुट्टी ले ली। दिन का 'लंगडे आदमी की तरह दिखना', लंबे निश्वास के लिए 'गुब्बारे में से हवा निकालना', ऑफीस से लौटने के बाद खुद को 'बुरी तरह से मारा गया आदमी' की तरह पाना आदि महानगरीय जीवन की घुटन की सशक्त वाणी है। डेविड साहब को 'मुर्गीखाने में बंद' पाना और 'केक की याद में हस्तमैथुन करना' जैसे शब्द-प्रयोग दर असल अनहोनी सपनों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति ही है।

'केक' रुकी हुई ज़िन्दगियों का आत्मालाप है। उसे ढोने के लिए कहानी के तीनों पात्र अभिशप्त हैं। समस्या से स्वयं उबरना उनकी बस की बात नहीं है, फिर भी कोशिश ज़ारी है। डेविड साहब और मिसेज़ डिसूज़ा अपनी सारी नाकामियों का समाधान अपने ही अतीत में पाते हैं और आत्मरति का अनुभव करते हैं। कथावाचक उससे थोड़ा भिन्न है मगर उसकी भी ज़िन्दगी एक पुनःकथन मात्र रह गयी है। महानगरीय जीवन समक्ष अपनी बची-खुची आत्मसम्मान को चुल्लू भर भी सही, आत्मसात करने के लिए वह और डोविड साहब जूते पोलिश करते हैं और बड़े-बड़े दूकानों में जाकर दूकानदार से फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोल लेते हैं। उसकी ज़िन्दगी सडे हुए अंडों से बनी 'केक' की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठकों के पत्र

संपादक
संग्रथन, हिन्दी विद्यापीठ,
तिरुवनन्तपुरम।

संपादक महोदय,

सादर-प्रणाम। प्रेषित संग्रथन पत्रिका नवंबर २०२१, दिसंबर २०२१ की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद। दोनों पत्रिकाओं की सामग्री उत्तम, पठनीय है। दोनों पत्रिकाओं का संपादकीय प्रशंसनीय है। आचार्य पी.जी.वासुदेव जी हिन्दी के बहुत बडे समर्थक तथा उसके विकास के लिए प्रयासरत रहते थे। 'देश के वीर सपूतों का दारुण अंत' मर्मस्पर्शी है, इस तरह एक साथ वीर सपूत अचानक मरते रहेंगे तो देश का क्या होगा? याद रखकर 'मन की बात' प्रकाशित कर रहे हैं, यह हमारे देश के प्रधानमंत्री के प्रति गौरवान्वित विषय है। 'महात्मागाँधी और डॉ.एस.राधाकृष्णन की दो अनोखी मुलाकातें' लेख उत्सुकता पूर्ण है। 'गाँधी चिन्तन में नारी विमर्श' पठनीय, छात्रोपयोगी है। पत्रिकाएँ उत्तम रूप से प्रकाशित हो रही हैं। साधुवाद।

भवदीया

बी.एस.शांताबाई

प्रधान सचिवा

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति

१७८, ४ मेन रोड़, बेंगलूर-५६० ०१८

फ़ोन : ०८०-२६६१७७७७

२१-०३-२०२२

तरह रह गयी है, फिर भी अपने शिक्षित होने के गर्व को कायम रखने का प्रयास इसी तरह ज़ारी रखते हैं। उन्हें अपने पले बढ़े माहौल से पिरोकर किसी बंजर धरातल पर रोपा गया है और परिवेश के दबाव ने मानो उसकी, खिलने की अभिलाषा पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। असगर वजाहत की 'केक' अधूरे मनसूबों की नज़दीक से परखी गयी जीवन-गाथा है, अतः अधखिली पंखुड़ियों का जीवन-साक्ष्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वजाहत असगर, उनका डर तथा अन्य कहानियाँ, शिल्पायन, १०२९५, लेन नं.१, वेस्ट गोरखा पार्क, शहादरा, दिल्ली, ११००३२, २००४।

सहायक आचार्य
पावनात्मा कॉलेज,
मुरिक्कासेरि.पि.ओ.,
इडुक्कि,
केरल।

❄

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी भाषा का व्यावहारिक संदर्भ

डॉ.शैलजा.के.

१४ सितंबर १९४९ को भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया। इस दृष्टि से १४ सितंबर १९९९ से १३ सितंबर २००० तक की अवधि को राजभाषा की स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाया गया। इस दौरान संसदीय राजभाषा समिति का गठन हुआ। इस समिति को उच्च्व अधिकार प्राप्त था जिसकी वजह से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अनेक कदम आगे बढ़े।

सन् १९४९ से लेकर अब तक के वर्षों में राष्ट्र ने जो प्रगति की है उसकी तुलना में आज राजभाषा ने ज्यादा प्रगति की है। व्यवहार के सभी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। भाषा के लिखित और बोलित रूपों में से बोलित रूप में हिन्दी का प्रचार प्रसार अत्यधिक बढा है। आज हिन्दी पूरे देश के संवाद की भाषा है। साथ ही उसने विश्व में सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओं की श्रेणी में अपना स्थान बना लिया है। हिन्दी को विश्व की भाषा बना देने में मीडिया का बड़ा हाथ रहा है। सारे चैनलों में हिन्दी के अधिकाधिक कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

कम्प्यूटर के क्षेत्र में तो हिन्दी ने काफ़ी प्रगति की है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों ने और सीडैक पूने ने इस क्षेत्र में काफी शोध किए और हिन्दी में वे सारे सोफ़्टवेयर उपलब्ध हैं जो अंग्रेज़ी में हैं, इनके द्वारा ई-मेल, अनुवाद, रिपोर्ट आदि तैयार कर सकते हैं। हिन्दी के अनेक सॉफ़्टवेयर आज बाज़ार में उपलब्ध है। कम्प्यूटर में अंग्रेज़ी में जितने कार्य हो सकते हैं वे सभी कार्य हिन्दी में भी संभव है।

राजभाषा कार्यान्वयन के बढ़ते प्रयासों की वजह से राजभाषा की प्रयुक्ति धीरे-धीरे एक अलग प्रयुक्ति बनती जा रही है। राजभाषा की शब्दावली का प्रचार-प्रसार बढ़ गया है और पूरे देश में राजभाषा हिन्दी के प्रति एक अनुकूल एवं समरस वातावरण बन गया है। प्रशासनिक परीक्षाओं और बैंकों के अधिकारी स्तर की परीक्षाओं के माध्यम के रूप में हिन्दी को भी शामिल किया गया है।

उपभोक्ता की दृष्टि से पूरा विश्व एक बहुत बड़ा विशाल उपभोक्ता क्षेत्र है। भूमंडलीकरण के होते ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रवेश भारत में हुआ था। इससे सरकारी और निजी क्षेत्र की कंपनियों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों में प्रतिस्पर्धा बनी है। इससे विश्व के हर क्षेत्र का माल घर बैठे मिल जाता है और अच्छी गुणवत्ता का माल भी मिल जाता है। प्रतिस्पर्धा की वजह से कभी-कभी कीमतों में गिरावट भी आती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत सबसे बड़ा बाज़ार है। इस बात को दृष्टि में रखते हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कंपनियों ने अपने प्रचार तंत्र के लिए भारतीय भाषाओं विशेषकर हिन्दी को भी चुना है। इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने हिन्दी को काफी प्रचारित प्रसारित किया है। इसमें विज्ञापन-कंपनियों को लाभ कमाने का उद्देश्य भी है।

हमारे शासकों की भाषा जो है वही प्रजाओं की भी भाषा होगी। जब सत्ता चाहेगी कि हमारी भारतीय भाषाओं का विकास हो तो रातों रात उसका विकास हो जाएगा। यदि दिल्ली से हिन्दी में पत्राचार होगा तो नियमानुसार उसका उत्तर हिन्दी में देना अनिवार्य होगा। इस प्रकार पूरे देश में हिन्दी में पत्राचार स्वतः होने लगेगा। अर्थात लोगों की भागीदारी राजकाज में होगी। लेकिन राजकाजवाले शासक ऐसा नहीं चाहते। जब तक उनकी भाषा अंग्रेज़ी रहेगी, तब तक जनता से उनकी दूरी बनी रहेगी। दूरी ज्यादा हो तो उनकी कुर्सी उतनी ही ज्यादा सुरक्षित होगी। लेकिन आम कर्मचारी भी हिन्दी में काम करने केलिए हिचकता है। इसके पीछे उपेक्षा का भाव निहित है। भारतीय भाषाओं के जानकार व्यक्ति को अंग्रेज़ी जानकार की तुलना में कमज़ोर माना गया है। इसलिए वह अच्छी हिन्दी लिखने के मुकाबले टूटी अंग्रेज़ी लिखना पसंद करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में और राजभाषा के क्षेत्र में हिन्दी भाषा की स्थिति निराशाजनक है। शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेज़ी की प्रमुखता बढ़ती जा रही है। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय भाषाओं को विकल्प के रूप में रखा गया है। मानविकी विषयों को हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयोग करनेवालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए हिन्दी से जुड़े लोग भी अपने बच्चों को अंग्रोज़ी स्कूलों में पढ़ाते हैं। सरकारी कार्य में हिन्दी के प्रयोग की बात बताई जाए तो चाहे देवनागरी टाइपराइटर हो या हिन्दी सोफ्टवेयर, कार्यालयों में उनका प्रयोग केवल हिन्दी विभाग तक सीमित रहता है। हमारी इसी मानसिकता में परिवर्तन हुए बिना कोई सुधार संभव नहीं है।

संसदीय राजभाषा समिति के निर्देशानुसार हिन्दी के पद सृजित हुए, उन पर भर्तियाँ भी हुईं। लेकिन राजभाषा नियमों के अनुसार निर्धारित मानकों के अनुरुप हिन्दी के पदों पर भर्ती न हो पायी। इसलिए चाहे बड़ा संस्थान हो या छोटा ज़्यादा से ज़्यादा एक हिन्दी अधिकारी और एक क्लर्क टाइपिस्ट लगाये जाते हैं। हिन्दी अधिकारी को पदोन्नति भी ठीक से नहीं मिलती। वह बिना अधिकार का अधिकारी बना रहता है।

हर देश के विकास के लिए ज़रूरी है कि वहाँ के शासक और नागरिकों की भाषा एक हो। भाषा उनको जोड़ने का सूत्र है। जब वह सूत्र टूट जाएगा तो सत्ता एवं जनता के बीच का संवाद और संप्रेषण सफल नहीं होगा। अंग्रेज़ों ने शासन चलाने के लिए हमें अंग्रेज़ी सिखायी और अपना काम चलाने के लिए कुछ हिन्दी भी सीख ली। हम पर शासन करने के लिए उन्होंने हमारी भाषा को खत्म कर डाली, तद्वारा हमारी संस्कृति पर भी आँच लगी।

आज़ादी मिली तो संघ की भाषा के रूप में हिन्दी अपनायी गयी। प्रांतीय सरकारें अपना कामकाज़ प्रांतीय भाषाओं में करेंगी ऐसी व्यवस्था भी की गई। इतने साल बाद भी हमारे समाज से अंग्रेज़ी की प्रभुता नष्ट नहीं हुई है। इसलिए हम अपने बच्चों को मातृभाषा के बदले अंग्रेज़ी शिक्षा दे रहे हैं। और भाषा का राजनीतीकरण भी कर दिया गया है। चुनाव के समय वोट हिन्दी में मांगते हैं और संसद पहुँचते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही हिन्दी भूल जाते हैं। चुनाव को दृष्टि में रखते हुए अंग्रेज़ी में करने के निर्देश ज़ारी कर देते हैं। लेकिन जब तक केन्द्र द्वारा संचालित अखिल भारतीय स्तर की परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी नहीं हो जाता, ये सारे निर्णय गलत साबित होंगे। जब तक देश की सारी परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी नहीं हो जाता तब तक अंग्रेज़ी ज़रूर पढ़ाई जानी चाहिए। नहीं तो हिन्दी पढ़े-लिखे लोग पिछडे बने रहेंगे। जब पिछड़े लोग हाशिये में रहेंगे तो, देश भी उन्नति प्राप्त नहीं कर पाएगा। अंग्रेज़ी ज्ञान के बिना विकास असंभव है, यह विचार भी गलत है। क्योंकि जर्मनी, जापान, पोलैंड आदि देशों ने अपनी भाषाओं के माध्यम से बहुत उन्नति प्राप्त की है। ज्यादा से ज्यादा अनुसंधान अपनी भाषाओं में करेंगे तो हमारी भाषाएँ समृद्ध होंगी और हमारा देश भी सुसंस्कृत हो जाएगा।

भाषा और उत्पादकता का गहरा संबंध है। कर्मचारी प्रायः प्रांतीय भाषाओं का जानकार होता है, जो उत्पादन की प्रक्रिया से सीधा जुड़ा हुआ है। तकनीकी को वह अपनी भाषा में बेहतर ढंग से समझ पाएगा जिसका प्रभाव उत्पादकता और उसकी गुणवत्ता पर पड़ेगा। इसलिए नियंत्रण-अधिकारी और अधीनस्थ कर्मचारी की भाषा देशी भाषा हो, यही उचित है।

हिन्दी भाषा उत्तरोत्तर तरक्की पा रही है तो कुछ मुद्दे ऐसे भी हैं, जो उसके आडे आते हैं। भूमण्डलीकरण और उदारीकरण की वजह से भारतीय भाषाओं पर प्रतिकूल असर पड़ेगा, यह विचार अप्रासंगिक हो गया है। हिन्दी के बढ़ते उपभोक्ता वर्ग इसके प्रमाण हैं। इनको दृष्टि में रखते हुए विज्ञापन कंपनियाँ भी अपने विज्ञापन हिन्दी में दे रही हैं। इनके बावजूद हमें अपनी भाषा एवं संस्कृति के अवांछित परिवर्तन के प्रति जागरूक होना चाहिए। संस्कृति परिवर्तनशील है फिर भी अपसंस्कृतीकरण को प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता। हमारी उपभोगी मानसिकता को लूटकर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत को अपनी उत्पादित वस्तुओं की मण्डी बना रही हैं। साथ ही हमारे संसाधनों पर कब्जा करने की साजिश भी ज़ारी है। इस अपसंस्कृतीकरण और बाज़ारीकरण के मूल में भाषा की भूमिका है। इसके प्रति सचेत होने की आवश्यकता है। सचेत होने का मतलब भाषा की गति को अवरुद्ध करना भी नहीं होना चाहिए।

हिन्दी भाषा के विकास में अडचन हिन्दी के शुद्धतावाद को लेकर भी उपस्थित होती है। हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के सभी क्षेत्रों में विशेषकर मीडिया के क्षेत्र में बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव के कारण हिन्दी भाषा अपभ्रष्ट होती है। आरोप भी हो रहा है। जीवन सतत् परिवर्तनशील है। उसके सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हमें स्वीकार्य है। यह जीवंतता का लक्षण है। संस्कृतियाँ भी परिवर्तित होती रहती हैं। इसलिए भाषा भी अपने परिवेश से प्रभावित हुए बिना रह नहीं पायेगी। भाषा में आनेवाले परिवर्तनों को भी इस दृष्टि से देखना ही उचित होगा। साथ ही इस बात पर भी ध्यान देना है कि कहीं भाषा के माध्यम से हमारे अपने अस्तित्व पर कुठराघात न हो।

विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में हमारे यहाँ मौलिक शोध बहुत कम हो रहा है, इसलिए नए शब्दों का निर्माण भी कम है। इसी कारण हिन्दी में सभी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वीकारने की बात मान ली गयी। हिन्दी आजकल विश्व की भाषा बनती जा रही है। यदि अहिन्दी भाषी-क्षेत्रों के लोग हिन्दी में बोलने-लिखने में कठिनाई का अनुभव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुँवर नारायण

'परिवेश : हम-तुम' में अभिव्यक्त सामाजिक संदर्भ

डॉ.मनोरमा गौतम

परिवेश:हम-तुम कुँवर नारायण का बहुत ही प्रसिद्ध और लोकप्रिय कविता-संग्रह है। इसमें कवि ने व्यक्ति तथा समाज के अन्तः सम्बन्ध के बारे में बताने का प्रयास किया है। बाहरी जीवन या बाह्य-परिवेश से व्यक्ति का कितना और किस तरह का सम्बन्ध होता है, कवि ने इसको बहुत ही गम्भीरता से बताने का प्रयास किया है। यह वास्तविकता कि व्यक्ति पर उसके परिवेश का प्रभाव सदैव ही रहता है, इसे इस तरह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति जिस परिवेश या जिस वातावरण-माहौल में पलता-बढ़ता है उसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर स्पष्ट नज़र आता है।

कुँवर नारायण ने 'परिवेश:हम-तुम' की भूमिका में लिखा भी है कि - "अपनी ओर से इतना ही कह सकता हूँ कि प्रत्येक कविता की एक अपनी परिस्थिति है, जो मैं नहीं, मुझसे उत्पन्न कही जा सकती है। सरल, कहीं कहीं अति सरल होते हुए भी यह बिल्कुल सतही नहीं। बाहरी जीवन को स्नेह और समझदारी से छूने का प्रयत्न किया गया है, कभी गम्भीरता से कभी छोटे-छोटे खिलवाड़ी वाक्-चित्रों द्वारा।"[१]

१. परिवेश : हम-तुम, भूमिका, कुँवर नारायण, पृ.सं.६

करते हैं तो हमें हिन्दी भाषा की मानकता की चिन्ता किए बिना उसका स्वागत करना चाहिए। तभी हिन्दी का वास्तविक उत्कर्ष होगा।

देश की एकता के लिए यहाँ राष्ट्रीयता की भावना होनी चाहिए। देश की संस्कृति एक होनी चाहिए। सांस्कृतिक एकता के लिए पूरे देश में एक भाषा का होना आवश्यक है। जब राष्ट्रीयता, संस्कृति और भाषा तीनों में समरुपता होती है तो कर्तव्यनिष्ठा की भावना आती है। इसलिए हमारी राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने के लिए और सांस्कृतिक एकता और कर्तव्यनिष्ठा से युक्त समग्र विकास के लिए एक भाषा का होना आवश्यक है, जिसके लिए हिन्दी सर्वथा योग्य है। जो सारी बोलियों एवं सारी प्रचलित भाषाओं को आपस में जोड़ती है। हिन्दी भाषा आज पूरे भारत की जरूरत बन गयी है। अपने राष्ट्र को विकासशील से विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अपनी भाषाओं का और हिन्दी का विकास भी अनिवार्य है।

असोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
टी.एम.सरकारी कॉलेज,
तिरुर, केरल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुँवर नारायण की कविता व्यर्थ के उलझाव से बचती है। उनकी कविताएँ व्यर्थ के उथल-पुथल और वैचारिक मतभेद से बचती हुई विवेकशील दृष्टि से सोचती-विचारती हैं फिर कहीं जाकर अपने समय, समाज तथा परिवेश को व्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में तत्कालीन समय, समाज, संस्कृति, व्यक्ति की अन्त, और बाह्य मनःस्थिति, घर-परिवार की दुनिया, रिश्तों का विघटन, तत्कालीन समस्याओं से जूझते मानव की स्थिति का यथार्थ अंकन मिलता है। अनुभूति और चिन्तन की विभिन्न धरातलों को स्पर्श करने वाले कवि अपनी कविताओं में सीमाएँ नहीं बाँधते। इसलिए बहुलता तथा विविधता कुँवर नारायण की कविता की विशिष्टता है।

कुँवर नारायण आज के परिदृश्य के एक अकेले ऐसे कवि हैं जिनका नैतिक दार्शनिक विजन यथार्थ की धरातल पर है। जिन कारणों से यथार्थवाद के मुहावरे वाली कविता तुरंत ग्राह्य हो उठती है उन सबके प्रति उदासीनता दिखाकर कवि अपने कठोर काव्यानुशासन में स्थित है। कई बार स्थितियाँ उनके अनुकूल होती हैं पर उसे व्यक्त करने की कुशलता उनके पास नहीं होती। कई बार प्रतिकूल स्थिति में भी वे बड़े अनमने ढंग से तथा बेबाक अपनी बात को स्पष्ट कह देते हैं। कई बार विरोधाभास की झलक देकर या एक अनिश्चित अटपटी स्थिति का बयान कर वे सीधे-सरल निष्कर्षात्मक वक्तव्य तक आ जाते हैं। 'परिवेशःहम-तुम' कविता संग्रह की कविता 'एक स्थापना' में कवि ने अपनी इस मनःस्थिति को दिखाने का प्रयास किया है।

"जब मैं नहीं/ मेरी ओर से कोई स्थापित करेगा मेरे वर्षों बाद/ कि आज भी कहीं जीवन था-/ क्योंकि केवल पहियों और पंखों वाली इस-बे-सिर/ पैर की सभ्यता में/ दफ़्तरों, दुकानों और कारखानों से अस्वीकृत/ होकर भी/ मैंने जीना पसंद किया।"[1]

कवि कुँवर नारायण आज के सामाजिक परिवेश का वर्णन करते हुए कहते हैं कि आज का समाज कितना कठोर तथा स्वार्थी हो गया है। आज के मशीनरी युग में हर चीज बिकाऊ है यहाँ तक कि मानवीय मूल्य तक बिक गये हैं जिसके पास पैसा होता है वह खरीद लेता है। व्यक्ति-व्यक्ति का दुश्मन बन गया है। किसी के पास किसी के लिए समय ही नहीं है। मानवीय संवेदनाएँ समाप्त हो गई हैं। यदि कोई रह गया है तो वो है चाबी से चलने वाला कृत्रिम मानव। जिसका हृदय निर्ममता से भरा है। 'परिवेशःहम-तुम' की कविता 'क्रय-विक्रय' में कवि ने बाज़ार के माध्यम से समाज की वास्तविक स्थिति को दर्शाया है। वे कहते हैं,

"मैं सोच रहा हूँ-/ रोज अपने को बेच रहा हूँ/ उस अपने को-लाडले को/ जिसके लिए बाज़ार से/ एक दुनिया खरीदना है/ वह दुनिया जो चाबी से चलती है/ और खिलौने की दुकानों में बिकती है।"[2]

आज की इस भागदौड़ भरी दुनिया में व्यक्ति अकेला होता जा

१. परिवेश : हम-तुम, भूमिका, कुँवर नारायण, पृ.सं.९४-९५ २. वही, पृ.सं.८८

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहा है। मानवीय संबंध चूर-चूर होते जा रहे हैं। प्यार दिखावे की चीज़ बनकर रह गई है। किसी के पास किसी के लिए न तो समय है न ही देने के लिए दिलों में स्नेह। इस तरह व्यक्ति अलगाववाद की स्थिति में आ गया है जो परिवार तथा समाज के लिए सही नहीं है। क्योंकि एक स्वस्थ समाज का निर्माण तभी संभव है जब समाज में रहने वाले व्यक्ति में आत्मीयता और प्रेम हों। कवि समाज की इस भयावह स्थिति का वर्णन करते हुए अपनी कविता 'तुम्हें पाने की अदम्य आकांक्षा' में कहते हैं -

"अ-व्यक्ति प्यार के सन्तोष तक उठ सके/ चाहो में शक्ति कहाँ?/ तुमको हर चेहरे के सुख-दुःख में देख सके,/ ऐसी अनुरक्ति कहाँ? x x x x ये सितारे तुम्हारी दूरी को दुहराते हैं/ मन को आकाश-सा सूना कर जाते हैं।"[१]

कुँवर नारायण का मानना है कि आज का मशीनरीयुग मनुष्य के व्यक्तित्व को नष्ट (ध्वस्त) कर रहा है। वह यांत्रिकता की बर्बरता तथा परेशानियों को झेलता हुआ परस्पर टूट रहा है। वे 'परिवेशःहम-तुम' की कविता 'मैं मनुष्य-मात्र' में इस स्थिति को दर्शाता हुए कहते हैं -

"अब हर चीज पत्थर की तरह कठोर/ यथार्थ की तरह बनी हुई/ खेल नहीं/ जिसकी दशानन-बर्बरता से टकराता/ मैं मनुष्य मात्र/ टूट रहा....।"[२]

कवि अस्तित्ववादी है। वे सदा सकारात्मक सोच रखते हैं और सकारात्मकता की प्रेरणा भी देते हैं। कवि मनुष्य को डट कर परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है किन्तु कभी-कभी कवि कमज़ोर भी पड़ जाता है। उसके भीतर पराजय, निराशा, कुंठा घर कर जाती है। कवि के इस दर्द को उनकी कविता 'हम साथ हैं' में देखा जा सकता है -

"एक उल्कापात पथ-विच्युत/ अँधेरे दायरे को नोचता आलोक/ जो बुझ जायेगा,/ भूखंड-जिसका चौंकता भूकम्प/ मुझको तोड़ जायेगा,/ छलकता मोह पारावार/ जो मुझको डूबाकर/ रेत के टीले सरीखा छोड़ जायेगा।"[३]

हताश-निराश कवि इस संसार से विमुख होना चाहता है। जीवन की निर्थकता से कवि बुरी तरह पीड़ित है। संसार की तमाम समस्याओं से च्युत कवि इस संसार को रहने योग्य नहीं मानता है। वह संसार को छोड़ कहीं दूर जाना चाहता है। कवि अपनी कविता 'समझौता' में समझौता परस्ती से घृणा करते हैं और समझौता के साथ जीनेवाले व्यक्तियों को चलता-फिरता कीड़ा समझकर कहता है -

"कि या तो अब सा ही तरह बेसबब जीना है/ या सुकरात की तरह जहर पीना है,/ या कोई इस बदनसीब ख्याल का क्या करे-/ कि एक जीती-जागती हलाहल पीड़ा से/ क्या बुरा है फिलहाल चलता-फिरता कीड़ा।"[४]

कुँवर नारायण निरर्थकता-बोध के अहसास से परिचित हैं। कवि

---

१. परिवेश : हम-तुम, भूमिका, कुँवर नारायण, पृ.सं.२९ २. वही, पृ.सं.८७
३. वही, पृ.सं. ८५ ४. वही, पृ.सं. ८९

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देख रहे हैं कि किस तरह व्यक्ति तथा समाज निरर्थकता-बोध से ग्रसित है और ग्रसित होता जा रहा है और इसके पीछे कारण है यांत्रिकता जैसे-जैसे यांत्रिकता अपना पैर फैलाये जा रही है। वैसे-वैसे व्यक्ति तथा समाज और पंगु होता जा रहा है। कुंवरनारायण की कविता 'यह युग' में अवसाद, निरर्थकता -बोध और विवशता इसी स्तर पर परिलक्षित होती है -

"इन्सान/ मगर बेजान/ मकानों-सा ढहता/ अपने से दूर पास बस्ती के रहता/ सभ्यता/ लगी नाखूनों पर पालिश जैसे/ हम ठाठ फकीरी/ बिकता जो पैसे-पैसे।"[1]

कुँवर नारायण की काव्य-चेतना नयी कविता की मूलधारा से सम्पृक्त है उसमें आधुनिकता का दिखावा न होकर परिवेशजन्य अनुभूतियों की सच्चाई है। ऊब, तिक्तता, गहन निराशा, अवसाद और कसक आरोपित मनःस्थितियाँ न होकर कवि के भोगे और जिये कटु यथार्थ हैं। ये स्थिति 'रोज की तरह' कविता में स्पष्ट नज़र आती है -

"अशान्ति, धुँआ और बेबसी/ सिगरेट पीता हुआ आसमान/ उमड़ते बादलों के धुँआधार छल्ले / बेज़बान।"[2]

जैसे कि 'परिवेश हम-तुम' संग्रह के नाम से ही संकेतित होता है कि इसमें प्रेमी-प्रेमिका के माध्यम से सामाजिक स्थिति को दर्शाया गया है। स्वभावतः इसमें संकलित प्यार की कविताएँ, ठोस प्यार की कविताएँ हैं, जो कल्पना या दार्शनिक चिन्तन से न उत्पन्न होकर एक समाज में रहने वाले व्यक्ति के मन में उत्पन्न हुई हैं। कुंवर नारायण इस बात को स्वीकारते भी हैं कि - इस संग्रह की कविताओं में बाहरी जीवन को स्नेह और समझदारी से छूने का प्रयत्न किया गया है और इसकी अधिकांश कविताओं में जीवन के प्रति सहज स्वीकृति का भाव है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कुँवर नारायण सजग तथा सचेत रचनाकार हैं। उनकी कविताओं में तीव्र भावशीलता है। भावनाओं की तीव्रता के कारण कवि में तीखी पीड़ा, संत्रास और घुटन का बोध है। कवि के समक्ष सामाजिक यथार्थ का ऐसा तीखा घेराव है कि वे उसे अपनी कविताओं से भेदकर निकलना चाहते हैं जो साधारण मानव के लिए आसान नहीं। वे मनुष्य के आंतरिक जीवन और बाह्य वातावरण या परिवेश के प्रति समान रूप से सचेत हैं, उनका मानना है कि जिस तरह का हमारे आस-पास का परिवेश होता है उसी तरह मनुष्य की चेतना भी गतिशील होती है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को संवारने, बढ़ाने तथा प्रेरित करने में परिवेश का बहुत बड़ा योगदान होता है। अतः कहा जा सकता है कि 'परिवेश:हम-तुम' कविता-संग्रह कवि की काव्य-यात्रा का मानसिक पड़ाव है।

नई दिल्ली।
मो : ९९१०७०९६५१

१. परिवेश : हम-तुम, भूमिका से, कुँवर नारायण, पृ.सं.९०   २. वही, पृ.सं.३८

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूर्यबाला की कहानियों में बालमनोविज्ञान 'सिंड्रेला का स्वप्न' के विशेष संदर्भ में

सूर्यबाला

पंचमी .आर.

मानव मन का विज्ञान है मनोविज्ञान। यह कहना भी उचित होगा कि मनोविज्ञान मानव मन के व्यापार का वैज्ञानिक अध्ययन है। मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। तुलनात्मक मनोविज्ञान, दैहिक मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान जैसे भिन्न-भिन्न शाखाएँ मनोविज्ञान के अंतर्गत आती हैं। मनुष्य की बोधात्मक क्रिया-प्रतिक्रियाओं का संचालन चेतन मन का कार्य-क्षेत्र है। चेतन मन से मानव व्यवहार को जानना और मानव व्यवहार के अध्ययन से अचेतन को जानना मनोविज्ञान है। हमारे मन असंख्य भावों को संचित रखते हैं। इन भावों को पहचानना और अध्ययन करना बहुत ही मुश्किल है। मन संबन्धी विशिष्ट ज्ञान मनोविज्ञान के अंतर्गत आते हैं। मनोविज्ञान मानसिक दृष्टि से व्यवहार का निरुपण और समाधान है। इसलिए स्पष्ट रूप से मनोविज्ञान की इस परिभाषा से सहमत हो सकते हैं कि "मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो जीवों के व्यवहार का अर्थ मानसिक दृष्टि से बताता है यहाँ तक कि वह मन से प्रभावित है (डॉ. जेम्स ड्रैवर)।"[1] बालमनोविज्ञान बचपन के मानसिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन होता है। मानव की बाल्यावस्था की घटनाओं, अनुभवों आदि जानने से उसके वयस्क जीवन की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन कर सकते हैं। इसलिए मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण एवं स्वतंत्र शाखा के रूप में बाल मनोविज्ञान का विकास हुआ। LC Crow and Crow के अनुसार बाल-मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें बालक के गर्भ काल से लेकर किशोरावस्था के प्रारंभ तक के मानसिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन होता है (Child Psychology is a scientific study of the individual from his prenatal beginnings through the early stage of his adolescent development. LC Crow and Crow, Child Psychology P.1)।

छोटे-छोटे बच्चों के मन की बातें समझना आसान कार्य नहीं है। उनको समझ पाने केलिए हमें बच्चों से मेल-मिलाप बढ़ाना पड़ता है और उनकी बातों को ध्यान से सुनना और उस पर सोचना पड़ता है।

१. शिक्षा मनोविज्ञान की रुपरेखा, जेम्स.एस.रौस, पृ.सं.२३

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तभी हम उनके अन्दर के भावों को एक हद तक समझ पाएँगे। बचपन को जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग माना जा सकता है। ऐसा विचार लगभग सभी मनोवैज्ञानिकों का है कि व्यक्तिगत और सामाजिक अनुकूलन केलिए जीवन के पहले के कुछ वर्ष सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। संपूर्ण जीवन का आधार शैवावस्था में ही तैयार हो जाता है। वास्तव में हम यही सोचते हैं कि बच्चे ज्यादा सोचते नहीं हैं क्योंकि हम बड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति, उनके मुँह से निकलने से पहले ही निभाते हैं। इसलिए बच्चे कभी-कभी निश्िंचत एवं उदास रहते हैं। बच्चों के आन्तरिक दुःख की मात्रा बडों के दुःख से अलग हो सकती है। उनके दुःखों का कारण कभी-कभी बडों की समझ में नहीं आता। इसलिए उन्हें समझाने के लिए बाल मनोवैज्ञानिक धरातल पर अध्ययन करना होगा।

मानव, जिंज्ञासा वृत्ति लेकर जन्म लेता है। आत्मज्ञान प्राप्त करना उसका लक्ष्य है। आत्मा की अनुभूतियों का रहस्योद्‌घाटन साहित्य के द्वारा संभव होता है। उसका मूल उद्देश्य मानसिक व्यापारों का प्रतिबिंबन है। इसलिए व्यक्ति और उस के मन को स्पष्ट करनेवाले (फ्रॉयड के) मनोविश्लेषणवाद से आधुनिक साहित्य बहुत कुछ प्रभावित है। साहित्यकार क्ी पात्र-सृष्टि मनोविश्लेषण के आविर्भाव से अधिक प्रखर होने लगी। बाह्य जीवन के चित्रण की स्थूलता से हटकर व्यक्ति और उसके अंतर्मन में उठनेवाले भावों एवं अंतर्द्वन्द्वों को केंद्रित करके आज साहित्य सृजन किया जाता है। साहित्य की सशक्त अभिव्यक्ति कथा साहित्य में पायी जाती है। मनोवैज्ञानिक कहानियाँ दुनिया देखने से अधिक दिल को देखती हैं। मन के द्वन्द्व का विश्लेषण करनेवाली ये कहानियाँ अचेतन मन की अतृप्त इच्छाएँ, दमित वासनाएँ विकृतियाँ और कुंठाएँ उद्‌घाटित करती हैं। हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कहानी रचना की विकास-प्रक्रिया प्रेमचंद से होने पर भी संपूर्ण रुप से मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को आधार बनाकर कहानी की रचना करने का श्रेय जैनेंद्र को प्राप्त होता है।

डॉ. सूर्यबाला की कहानियाँ सामाजिकता से वैयक्तिकता की ओर, बाह्यता से आन्तरिकता की ओर की यात्रायें हैं। नारी की समस्याओं और इससे संबद्ध प्रश्नों पर सूर्यबाला ने गहराई से सोचा है। नारी को व्यक्ति मानते हुए नारी मन के आंतरिक अंतर्द्वन्द्वों, बाह्य संघर्षों को सूक्ष्मता से अपनी सृष्टि में विश्लेषित किया गया है। उनकी बालमनोवैज्ञानिक धरातल पर रचित कहानी है 'सिंड्रेला का स्वप्न'। प्रस्तुत कहानी घर में नौकरानी का काम करनेवाली एक छोटी बालिका की दर्दभरी दास्तान है। एक लेखिका के यहाँ काम करने केलिए आयी छोटी बच्ची है कहानी का केंद्र। आर्थिक कमी के कारण उनको अपने बचपन में दूसरों के घर में काम करना पड़ता है। मालकिन बीस रुपये वेतन के साथ उन्हें खाना-पीना भी दे देती है। उनकी ईमानदारी एवं निष्ठा पर प्रसन्न लेखिका ने उन्हें पढ़ने की सलाह भी दे दी। एक दिन लड़की ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मालकिन की बोटी मोना की सिंड्रेला की किताब देखी। और उनकी इच्छानुसार मोना ने उसे सिंड्रेला की कथा सुनायी। कहानी में परी के बारे में सुनकर वह चकित हो जाती है। वह लेखिका से पूछती है कि "बाई, किताब में क्या झूठ बात लिखेगा होता?" लेखिका ने उत्तर दिया था-हाँ-हाँ स्टोरी है तो क्या? पर सीख तो मिलती ही है। इस स्टोरी की सीख यह है कि खूब काम करने वाली नेक और ईमानदार लड़की को एक-न-एक दिन अच्छा फल ज़रूर मिलता है।"[१]

बालसुलभ मनोव्यवहार से प्रेरित होकर परी के आने की प्रतीक्षा में आर्थिक दयनीनता से बच पाने का सपना संजोकर बालिका कहानी के अनुसार कोयले वाले स्टोर में जाकर सो गयी। कोयले घर में सो जाने से उसको बुखार आया। इसके फलस्वरूप अंत में उस बेचारी लड़की की मृत्यु भी हो जाती है। लड़की की लाश देखकर लेखिका को लगा कि "उसकी आँखें शांत थीं, जैसे कोई बहुत मीठा सपना बंद हो आँखों में। पीडा के बावजूद उसके होंठ स्पंदित थे जैसे, दूर सुनहली जादुई छडी और सितारों की चमक लिए कोई परी आ रही हो धीरे-धीरे।"[२]

प्रस्तुत कहानी की लड़की बहुत ही संवेदनशील है। सूर्यबाला जी ने कहानी में उस निरीह बच्ची के मानसिक व्यवहार एवं उनकी बालसुलभ निष्कलंकता पर प्रकाश डाला है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से 'सिंड्रेला का स्वप्न' कहानी का अध्ययन-विश्लेषण करने पर यह महसूस होता है कि निश्चय ही इस कहानी द्वारा लेखिका का उद्देश्य बालकों की मानसिकता का चित्रण करना है। बालिका के व्यवहारों एवं संवादों से हम बालमनोविज्ञान का सही रूप देख पाते हैं।

बच्चों के साथ उचित संबन्ध स्थापित करने से ही हमें उनके मन को समझने का अवसर मिलता है। माता-पिता तथा परिवार बच्चों के मन को पूर्ण रूप से पहचानने में असमर्थक रह जाते हैं। इसलिए उनके मन को सही रूप से समझने केलिए उनके साथ उचित संबंध स्थापित करना चाहिए। हर एक बच्चे में व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। इसलिए उनके मानसिक धरातल पर उतरने केलिए बुजुर्ग लोगों को ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए। 'तोहफा', 'सुमिन्तरा की बेटियाँ', 'कागज़ की नावें', 'चाँदी की बाल', 'अंतरंग', 'माय नेम इश ताता', 'जाते हुए गौरा गुनवंती', 'फरिश्ते', 'जेब्रा', 'नीली थैली वाला पैरशूट' आदि सूर्यबाला जी की अन्य बालकेंद्रित कहानियाँ हैं।

सहायक ग्रंथ

१. बाल विकास-अमन रस्तोगी।
२. धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिकता, डॉ.सुधा.ए.एस.
३. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ.ममता शुक्ला।

शोध छात्रा
यूनिवेर्सिटी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम
केरल।

---

१. गृहप्रवेश, डॉ.सूर्यबाला, पृ.सं.१४०-१४१ २. वही, पृ.सं.१४३

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जयशंकर प्रसाद

'चन्द्रगुप्त' में अभिव्यक्त नवजागरण

डॉ.हेमा नारायणन

सुषुप्ति में लीन जनता को फिर से जाग्रत करने की प्रवृत्ति है नवजागरण। भारतीय नवजागरण एक ऐतिहासिक तथ्य है। यूरोपीय औपनिवेशिक संस्कृति एवं सभ्यता से मुक्ति तथा अपनापन यानि स्वत्व को पहचानकर अपनी जीवन-शैली एवं चिंतन में नवीन चेतना लाना भारतीय नवजागरण का लक्ष्य है। मानवीयता या मानव स्वतंत्रता इसकी मूल संवेदना है।

जनता में जागरण की चेतना लाने में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक घटनाओं को नये ढंग से व्याख्यायित करना और तद्वारा जनता के बौद्धिक चिंतन में परिवर्तन लाना नवजागरणकालीन रचनाओं की मुख्य प्रवृत्ति है। हिन्दी नाट्यसाहित्य भी इससे अच्छूता नहीं है। हिन्दी साहित्य के अनमोल रत्न जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चन्द्रगुप्त' नाटक इसका एक सशक्त उदाहरण है। यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसकी कथावस्तु मौर्यसाम्राज्य के स्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य पर आधारित है। लेकिन इस नाटक में ऐतिहासिकता एक तकनीक मात्र है। इसका मुख्य लक्ष्य भारतीय जनमानस में नवीन दृष्टि प्रदान करना है। लेकिन इसकेलिए लेखक ने क्यों ऐतिहासिकता को अपनाया है? यह एक सशक्त सवाल है। भारत की ऐतिहासिक घटनाओं का संबन्ध भारतीय जनता या भारतीय मिट्टी से है। भारत के ऐतिहासिक शूर-वीर पात्रों से भारतीय जनता खूब परिचित है, ये सब उनके ही लोग हैं। इसलिए एक अपनापन की भावना यहाँ देखी जा सकती है। इस अपनापन की भावना से साहित्यकार अपने लक्ष्य तक बहुत जल्दी पहुँचता है। अतीत के गौरवगान के ज़रिए वर्तमान चेतना में परिष्कार और नवीन दृष्टि लाकर लोकहितकामी भविष्य का निर्माण करना साहित्यकार का लक्ष्य है।

औपनिवेशिक भारतीय परिस्थिति का चित्रण इस नाटक में सशक्त रूप से देखा जा सकता है। औपनिवेशिक सत्ता स्थापित करने के पहले भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। यहाँ एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था नहीं थी। एक राज्य दूसरे राज्य को शत्रु समझता था। राज्यों के बीच स्पर्धा, ईर्ष्या, प्रतिशोध जैसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संकुचित भावनायें थीं। एक राज्य दूसरे राज्य को परास्त करने केलिए तीसरे की सहायता माँगना तथा तीसरे का गुलाम तक बनने को तैयार था। चन्द्रगुप्त नाटक का आम्भीक जो गाँधार राज्य का पुत्र था, राजा पर्वतेश्वर का विरोधी था। इसलिए उसने पर्वतेश्वर को परास्त करने केलिए यवनों को भारत की ओर आमंत्रित किया। यहाँ आम्भीक तत्कालीन स्वार्थी, लोभी तथा मूर्ख सत्ताकामी के प्रतीक रूप में आता है। अपनी स्वार्थपूर्ति केलिए वह अपने मातृराज्य को बेचता है। साथ ही वह देशद्रोही बन जाता है। आम्भीक की कायरता का परिचय में चन्द्रगुप्त और सिंहरण का बातचीत से मिलता है - चन्द्रगुप्त : यह क्या राजकुमार? खड्ग को कोष में स्थान नहीं है क्या ? सिंहरण : (व्यंग से) वह तो स्वर्ण से भर गया है"[१] मतलब राजा ने खुद अपने राज्य को बेच दिया है।

उस ज़माने में ऐसे कई राजा लोग थे जिन्होंने अपने आपको औपनिवेशिक शक्तियों को समर्पित किया था। 'चन्द्रगुप्त' नाटक के गाँधार राजा इसका एक उदाहरण है। उसको यह मालूम नहीं था कि औपनिवेशिक शक्तियों का लक्ष्य अपने साम्राज्य की वृद्धि तथा दूसरे राज्यों के शोषण के ज़रिए अपनी पूँजी को बढ़ाना है। लेकिन धीरे-धीरे गाँधार राजा ने अपनी गलती मान ली। उनके पश्चात्ताप का स्वर ऐसा है कि "आम्भीक ने लज्जा की यवनिका में मुझे छिपा दिया है।"[२] गाँधार राजा अपने कुकर्मों के प्रति खुद लज्जित हो जाता है।

कुछ राजाओं ने औपनिवेशिक शक्तियों के खिलाफ स्वाभिमान के साथ लडा था। पर्वतेश्वर उनमें एक था। उनकी वीरता देखकर सिकंदर स्वयं चकित हो जाता है। वह आगे युद्ध करना छोड़ देता है। और पर्वतेश्वर से पूछता है "....अब मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करूँ" पर्वतेश्वर इसका वीरोचित उत्तर भी देता है - "जैसे एक नरपति दूसरे नरपति के साथ करता है.....।"[३] इन शब्दों में पर्वतेश्वर की वीरता, स्वाभिमान की भावना आदि दर्ज हैं।

ऐसे वीर-शूर राजाओं को अपने वश में लाने केलिए औपनिवेशिक शक्तियों ने संधि का मार्ग अपनाया है। यवनों से लड़ने की क्षमता होते हुए भी राजा पर्वतेश्वर उनके साथ संधि करता है। उस संधि की वजह से वह खुद यवनों की कठपुतली बन जाता है। सिकंदर मालवों पर आक्रमण करना चाहता है। उनको सहयोग देने में पर्वतेश्वर मज़बूर हो जाता है। अलका उन्हें समझाती है कि "पराधीनता से बढ़कर विडंबना और क्या है? अब समझ गये होंगे कि वह संधि नहीं, पराधीनता की स्वीकृति थी।"[४] औपनिवेशिक शक्तियों से संधि का मतलब पराधीनता की स्वीकृति है। बाद में परवतेश्वर अपनी गलती को

---

१. जयशंकर प्रसाद संपूर्ण नाटक, अतुल्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.७५ २. वही, पृ.सं.१३७
३. वही, पृ.सं.११६ ४. वही, पृ.सं.१३७

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकार करता है और वह पश्चात्ताप करता है।

औपनिवेशिक शक्तियों ने देशी राजा तथा राज परिवार के सदस्यों को बन्दी बनाया। गाँधार की राजकुमारी होते हुए भी यवनों की कैदी बन गयी है राजकुमारी अलका। आम जनता का शोषण, पूँजी की वृद्धि और साम्राज्य का विस्तार औपनिवेशिक शक्तियों का लक्ष्य है। जो लोग औपनिवेशिक शक्तियों से असहमत हैं उनसे वे युद्ध करते हैं। औपनिवेशिक शक्तियाँ आम जनता का शोषण करने केलिए उनके बीच आतंक फैलाती हैं। इसके बारे में चन्द्रगुप्त कहता है कि "....यवन आतंक फैलाना जानते हैं और उसे अपनी रणनीति का प्रधान अंग मानते हैं - निरीह साधारण प्रजा को लूटना, गाँवों को जलाना, उनके भीषण परंतु साधारण कार्य हैं।"[1]

औपनिवेशिक समय में भारत कई भ्रष्ट राजाओं से त्रस्त था। वे अधिकार को बनाये रखने केलिए कुछ भी करते थे। वे लोग सिर्फ अपनी खुशी के बारे में सोचते थे। 'चन्द्रगुप्त' नाटक का राजा नंद इसका उदाहरण है। नन्द तत्कालीन भोगी, विलासी राजाओं का प्रतिनिधि है। प्रजा के बारे में सोचे बिना वह सुरा और सुंदरी के पीछे पड़ा है। सत्तालोभी नंद सुहासिनी पर हमला करता है। अपने खिलाफ जो आवाज़ उठाते हैं उनको दण्ड देता है। नंद के कुशासन के खिलाफ चाणक्य ने आवाज़ उठायी। इसिलए नंद ने उसे राज्य से निर्वासित किया। नंद ने शकटार को अंधकूप में डाल दिया। मौर्य सेनापति की हत्या करके उसकी पत्नी को नंद ने बंदी बनाया। चाणक्य के शिखा पकड़कर नंद ने उन्हें बाहर कर दिया।

औपनिवेशिक भारत में नारी की दशा बहुत बुरी थी। राजा लोग उनको राजनीति का खिलौना बनाना चाहते थे। अपने लाभ केलिए वे नारी का इस्तेमाल करते थे। राजकुमार आम्भीक राजा पर्वतेश्वर के साथ संधि करता है। विरोध मिटाने केलिए वह उसकी बहन से शादी करता है। उस समय आम्भीक की बहन अलका पर्वतेश्वर की कैदी थी। लेकिन वह अपनी बहन की मुक्ति के बारे में सोचता नहीं है। वह चाहता है कि अलका पर्वतेश्वर से शादी करे। राजा पर्वतेश्वर अपने कर-बल से सिंहरण को परास्त करके अलका को पाना चाहता है। वह कहता है "....अलका के दो प्रेमी नहीं हो सकते।"[2] नारी को अपनी वैयक्तिक संपत्ति के रूप में देखता है राजा पर्वतेश्वर। चन्द्रगुप्त पर्वतेश्वर की सेना की सहायता से मगध पर विजय प्राप्त करता है। अपने आपको आधा साम्राट समझकर पर्वतेश्वर मगध की राजकुमारी कल्याणी पर हमला करने केलिए तैयार हो जाता है। पर्वतेश्वर केलिए नारी मात्र एक वस्तु

---

१. जयशंकर प्रसाद संपूर्ण नाटक, अतुल्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.१२८ २. वही, पृ.सं.१२२

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तथा परीक्षा जीतने में मिलनेवाला तोफ़ा है।

औपनिवेशिक भारत की युवापीढ़ी विदेशी शिक्षा से परिचित है। चन्द्रगुप्त मगध निवासी तथा तक्षशिला का छात्र है। फिर भी यवन रणनीति को समझने केलिए वह सिकंदर के शिविर में रहता है। उसकी रणनीति को समझकर उसके खिलाफ वह लड़ता है।

औपनिवेशिक भारत परंपरागत रुढिग्रस्त जातिव्यवस्था से भी त्रस्त था। समाज कई जातियों तथा उपजातियों से विभक्त था। प्रत्येक जनता पर उसका असर है। वे अपना परिचय जाति के आधार पर देते थे। 'चन्द्रगुप्त' नाटक के सिल्यूकस और चाणक्य का संवाद इसका एक उदाहरण है।

"सिल्यूकस : .....तुम कौन हो?/ चाणक्यः-एक ब्राह्मण"[१]

औपनिवेशिक भारत की राजनीतिक परिस्थिति के बारे में चाणक्य यों कहता है - "नीचों के हाथ में इन्द्र का अधिकार चले जाने से जो सुख होता है उसे मैं भोग रहा हूँ।"[२] सत्ता बुरे लोगों के हाथ में आ गया है। उसका फल संपूर्ण जनता भोग रही है। औपनिवेशिक भारत की सामाजिक दशा के बारे में चन्द्रगुप्त कल्याणी से कहता है कि - "बन्दी सारा देश है, राजकुमारी, दारुण द्वेष से सब जकड़ते हैं।"[३] पूरा देश कैदी है। अस्वतंत्रता, गुलामी से पूरी भारतीय जनता त्रस्त है।

औपनिवेशिक शक्तियों का लक्ष्य पूरे विश्व में अपने साम्राज्य का निर्माण है। वे अपने आपको शक्तिशाली तथा जगद्विजेता मानते हैं। उनके इस घमण्ड को तोड़ता है 'चन्द्रगुप्त' नाटक का दाण्ड्यायन। वह कहता है - "तुम्हारा राजा अभी जेहलम भी पार नहीं कर सका, फिर भी जगद्विजेता की उपाधि लेकर जगत् को वंचित करता है।"[४]

अपने उच्च मूल्यों के ज़रिए भारतीय जनता ने औपनिवेशिक शक्तियों के खिलाफ लडा था। उस समय का सबसे बड़ा मूल्य स्वतंत्रता था। औपनिवेशिक भारत दूसरों के अधीन है। पराधीनता में कभी विकास संभव नहीं है। इसलिए पराधीनता एवं भ्रष्ट राजाओं से मुक्ति उस समय की माँगें थीं।

भारत उच्च मूल्यों से संपन्न राष्ट्र है। श्रेष्ठ गुणों को भारत बढावा देता है। भारतीय संस्कृति इन गुणों का प्रस्फुटन है। भारत की विशाल सांस्कृतिक दृष्टि से औपनिवेशिक शक्ति भी प्रभावित हुई है। 'चन्द्रगुप्त' नाटक की कार्नेलिया विदेशी औरत है, फिर भी वह भारत तथा भारतीय संस्कृति से प्यार करती है। वह कहती है कि- "यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि-भारतभूमि क्या

---

१. जयशंकर प्रसाद संपूर्ण नाटक, अतुल्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.१५७ २. वही, पृ.सं.७६
३. वही, पृ.सं.७७ ४. वही, पृ.सं.८२ ५. वही, पृ.सं.१२७, १३८

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भुलाई जा सकती है? कदापि नहीं। अन्यदेश मनुष्यों की जन्मभूमि है: यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।"

मानवीयता भारतीय संस्कृति का आधार है। भारत विश्व के सामने मानवीयता का संदेश रखता है। भारत के श्रेष्ठ मूल्यों से प्रभावित है सिकंदर। वह कहता है कि – "मैं तलवार खींचे हुए भारत में आया, हृदय देकर जाता हूँ।"[1] साम्राज्य की वृद्धि तथा शोषण करने केलिए औपनिवेशिक शक्तियाँ यहाँ आयी थीं। लेकिन यहाँ की श्रेष्ठ संस्कृति और मूल्यों को उन्होंने भी अपनाया। साथ ही वे मानवतावादी भी बन गये।

भारतीय नवजागरण का मतलब भारत के राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जागरण का पुनर्निमाण है। इसका आधार मानवीयता, स्वतंत्रता, कर्मण्यता, राष्ट्रीयता जैसे उच्च मूल्य हैं। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में भारतीय नवजागरण के सशक्त मुद्दे दर्ज हैं।

बी.एड.छात्रा
सहोदरन अय्यप्पन मेमोरियल
कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
पूत्तोत्ता,
कोच्ची,
केरल।

✠

१. जयशंकर प्रसाद, संपूर्ण नाटक, अतुल्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.१४०

संविधान दिवस

भारत का संविधान भारतीयता का धर्मग्रंथ है। इसकी कई विशेषताएँ हैं, एक तो यह कि भारत के स्वतंत्र होने के बहुत पहले ही इसको रूपायित करने का प्रयास शूरू हो गया था। दूसरा यह कि इसके निर्माण में २ साल ११ महीने और आठ दिन लगे, अनेकों मनीषियों का सहयोग इसके पीछे रहा। सन् 2015 से लेकर हमने भारतीय संविधान दिवस को एक पर्व के रूप में मनाना भी आरंभ कर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ .एस .रमा उण्णित्तान

फुर्सत

फुर्सत कभी न मिली,
तेरे बारे में सोचने को,
रिश्ता बाँधें या न बाँधें
फिर भी याद मिटी नहीं।
    फुर्सत कभी न मिली,
    तेरी आँखों की चमक,
    तेरे गालों की दमक,
    समझने का साहस,
    फिर भी याद मिटी नहीं।
ज़िन्दगी के हेर-फेर में
डूबकर दिन चलता रहा,
जब अकेली हो गयी,
तब याद फिर आयी,
फरियाद किससे कहूँ?
    वसन्त स्थाई नहीं,
    मौसम बदलता ही रहेगा,
    अभी पतझड में वृथा ही,
    फिर याद आयी तेरी।
फुर्सत ज़िन्दगी भर,
हमेशा न मिलती हमें।
जब मिले स्वागत करना,
बाद केलिए छोड़ न देना,
पश्चात्ताप करना पड़ेगा ज़रूर।

धोखा

बैठी मैं यों लिखने को,
सोच रही थी क्या लिखूँ?....
देखा, कमरे के कोने में,
एक मकडी जल्द-बाजी से,
ताना-बाना बुन रही।
    ताकती ही रही मैं,
    बुन लिया, जल्दबाजी से,
    एक अच्छा सा जाल।.....
फिर वह आराम करने लगी,
चुप-चाप एक कोने में।
    एक मछड आया, गुन-गुनाकर,
    उड आया, मस्ती से गाना गाकर,
    फंस गया, जाल में अचानक,
    मकड़ी आयी, उसे पकड़ कर
    ले गयी, दबोचकर खा लिया।
देख रहा था, एक छिपकली,
मकड़ी का खेल, दीवार पर,
वह पहुँच गया, जाल के पास
बाहर डाली जीभ, मकड़ी की ओर,
फंस गयी, जीभ में मकड़ी,
अन्दर खींची जीभ, एकदम छिपकली ने।
    क्या-क्या धोखे रोज़ चलते हैं,
    भगवान की करामात है ये सब!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मलयाळम कविता

वापसी

मूल कवि : डॉ. देशमंगलम रामकृष्णन
अनुवाद : प्रो.सी.एस.श्रीकुमारी

तू ने मुझे दिया
झाबे भर समय
मैं ने उसे आस्मान में बोया
धरती पर भी
और फ़सल काट लिया-
नरक में
थोथे की याद में विलाप करता रहा।

दे दे मुझे
दोने भर निमिष एक बार फिर
उन मुखडों को दिखलाने केलिए
जिन्हें पहले कभी देखा था,
मगर भूल गया।
अदृष्ट के पीछे फेंके गये बच्चों के
विषाद को,
शाप को
स्वीकारने केलिए।

मार की सूजन से होश उड गयी
बहिन से
माफ़ी माँगने के लिए।

अपना सब कुछ मुझे सौंप कर
जिस मित्र ने बिदा ली
उसके पैरों पड कर
तडपने केलिए।

जल्दबाज और अधीर होकर
चाकू व तलवार उठा कर
गुज़र गया मेरा ज़माना।

काले केनवास में चित्रित
सारे नज़ारे फ़ीके पड गये
रंगीन फरों की चिकनाइयाँ
जर्जरित हुईं।

झाबे भर तारे तू ने दिए
जिन्हें सुरक्षित रखा था मैं ने
बिना दिखाये नन्ही सी अँखियन को भी।
कोठी खोल कर जब देखा
सितारे बन चुके थे पत्थर।

तूने दिया था मुझे एक सूरज
खुद दूसरा सूर्य बनने की कूद में
भूल बैठा मैं उसे।
लो, वह ओझल होता जा रहा है
दूसरे क्षितिज में।
वह समय बीत चुका
जो तू ने दिया था।
तेरा हाथ मेरी ओर बढ़ता आ रहा है
तेरी कमर में दबने से पहले
इस छोटी लहर के थम जाने से पहले
दे दे मुझे दोने भर निमिष
ज़रा याद करके देखूँ सब कुछ।

मेरा रंग क्या था
मेरा अर्थ क्या था
मेरा शब्द क्या था
थोड़ा पीछे की ओर मुझे ले चल
ज़रा देख लूँ
मैं अपनी विगत छायाओं को
किसी का दिया कुर्ता पहन कर
ठंड से बचकर रहे सुबहों को
नदी किनारे
आँसू सूख कर बिछुडी सांझों को,
किसी की भी कुछ न बिगाड़ूँ
इस मोह से चलता गया
और अंत में
सब कुछ अग्निकुंड में गाड़ दिए
मेरे पागल दिनों को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्नोत्तरी

जुगनू

1. 'शब्दर्थो ते शरीरं रस आत्माः' - किसकी उक्ति है?
   a. भरतमुनि b. विश्वनाथ c. राजशेखर d. मम्मट
2. 'विक्रमांक देव चरित' के रचयिता कौन हैं?
   a. बिल्हण b. वामन c. कुंतक d. क्षेमेन्द्र
3. "क्यों हमें थोड़ी-सी जनसंख्या को बढ़िया मीठी 'केक' खिलाने की कोशिश करनी चाहिए, जबकि मज़दूर-किसान जनता के पास काली रोटी भी नहीं है।" किसका कथन है?
   a. कार्ल मार्क्स b. एंगल्स c. सार्त्र d. लेनिन
4. "Beauty, Good and Knowledge are three sisters" किसने कहा था?
   a. शेक्स्पीयर b. टेन्नीसन c. मिल्टन d. गोर्की
5. रीतियुग में प्रचलित रामभक्ति काव्य परंपरा की 'स्वमुखी' शाखा के प्रवर्तक कौन थे?
   a. तुलसीदास b. लालदास c. नरहरिदास d. रामचरणदास
6. 'विरह को घनानंद की पूँजी' कहनेवाले हिन्दी के समालोचक?
   a. डॉ.नगेन्द्र b. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल c. डॉ.रामधारी सिंह दिनकर d. गुलाबराय
7. मोहन राकेश की किस अधूरी कृति को कमलेश्वर ने पूरा किया था?
   a. आधे अधूरे b. पैर तले की ज़मीन c. लहरों के राजहंस d. आषाढ़ का एक दिन
8. 'नींद क्यों रात भर नहीं आती' किसकी नाट्यकृति है?
   a. लक्ष्मीनारायणलाल b. मोहन राकेश c. कमलेश्वर d. सुरेन्द्र वर्मा
9. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी किसका लिखा हुआ है?
   a. लक्ष्मी नारायण मिश्र b. उपेन्द्रनाथ अश्क c. उदयशंकर भट्ट d. डॉ.रामकुमार वर्मा
10. हिन्दी में 'निबन्ध' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस कृति में हुआ है?
    a. पृथ्वीराज रासो b. पद्मावत c. रामचरितमानस d. रामचन्द्रिका
11. "आधुनिक रहस्यवाद के कविगण, कवि पहले हैं, और साधक भक्त या दार्शनिक बाद में, जबकि संत कवि संत पहले हैं कवि तदुपरान्त।" किसका कथन है?
    a. भारत भूषण सरोज b. विजयेन्द्र स्नातक c. गणपतिचन्द्र गुप्त d. डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ
12. "जागें जन-जन, ज्योतिर्मय हो दिन का क्षण-क्षण" - किसकी पंक्तियाँ हैं?
    a. रघुवीर सहाय b. नरेशकुमार मेहता c. हरिनारायण व्यास d. शकुन्त मथुर
13. "आज कम्यूनिस्ट नहीं हूँ। यही नहीं, अब तो लगता है कि जब कहता था तब भी नहीं था।" हिन्दी के किस कवि का कथन है?
    a. नेमिचन्द्र b. भारतभूषण अग्रवाल c. मुक्तिबोध d. रामविलास शर्मा
14. "आरंभ में 'गुलाबी' शब्द से, उसे उस रंग तक पहुँचने के लिए गुलाब के फूल की मध्यस्थता अनिवार्य रही होगी; ......पर अब वैसा नहीं है। अब हम शब्द से सीधे रंग तक पहुँच जाते हैं, फूल की मध्यस्थता अनावश्यक है।" किसका विचार है?
    a. भवानी प्रसाद मिश्र b. धर्मवीर भारती c. अज्ञेय d. शमशेर बहादुर सिंह
15. रवीन्द्रवर्मा के किस उपन्यास में आदर्शवाद और भ्रष्टाचार की टकराहट का अंकन हुआ है?
    a. पत्थर ऊपर पानी b. निन्यानबे c. किस्सा तोता सिर्फ़ तोता d. जवाहर नगर

उत्तर

1. c 2. a 3. d 4. b 5. d
6. c 7. b 8. d 9. b 10. c
11. d 12. a 13. b 14. c 15. b

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ.एल.सुनीताबाई स्मृति घोषणा पुरस्कार

डॉ.एल.सुनीता बाई

डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी

हिन्दी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्ची के भूतपूर्व प्रोफेसर स्वर्गीय **डॉ.एल.सुनीता बाई** की स्मृति में श्रेष्ठ अनूदित कृति के लिए दिये जानेवाला **डॉ.एल.सुनीताबाई स्मृति घोषणा पुरस्कार - 2021** तिरुवनन्तपुरम सरकारी महिला कॉलेज की पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्षा **डॉ.सी. जे.प्रसन्नकुमारी** को प्राप्त हुआ। दस हज़ार रुपये और प्रमाण पत्र पुरस्कार के रूप में प्रदान किये गये। हिन्दी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति **डॉ.के.एन.मधुसूदनन** के करकमलों से पुरस्कार वितरित किया गया। पुरस्कार केलिए चुनी हुई कृति स्वर्गीय **सी.वी.राम पिल्लै** द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यास **'मार्ताण्डवर्मा'** का हिन्दी अनुवाद है।

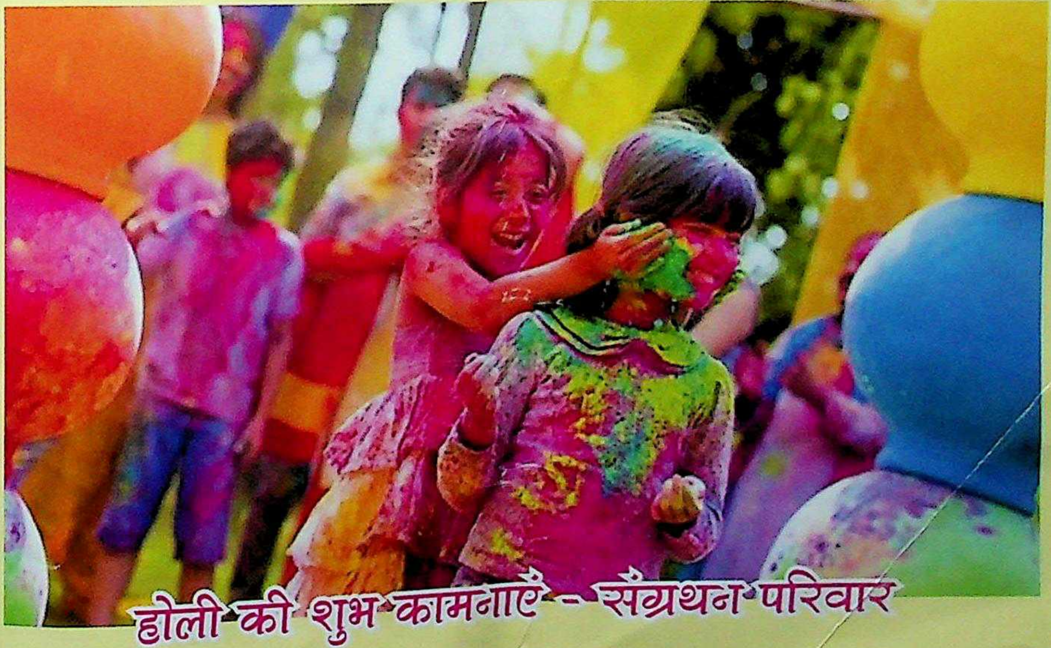

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

संग्रथन
RNI No.44742/87

₹ : 20
Date of Publication 26.03.2022

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

FORM IV

Statement regarding ownership and other particulars about newspaper SANGRATHAN (Hindi Monthly) to be published in the first issue every year after the last day of February.

1.	Place of publication	:	Thiruvananthapuram, Kerala
2.	Periodicity of its publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	Dr.V.V.Viswam
	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Basera', CRA - 187, Chenthi, Pongummoodu, Medical College.P.O., Thiruvananthapuram-11
4.	Publisher's Name	:	Dr.V.V.Viswam
	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Basera', CRA - 187, Chenthi, Pongummoodu, Medical College.P.O., Thiruvananthapuram-11
5.	Editor's Name	:	Dr.M.S.Vinayachandran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	T.C.49/280(1), Kamaleswaram Manacud.P.O., Thiruvananthapuram-9
6.	Name and address of individual/individuals who own the news paper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital	:	Dr.V.V.Viswam 'Basera', CRA - 187, Chenthi, Pongummoodu, Medical College.P.O., Thiruvananthapuram-11
7.	Place of Publication	:	Hindi Vidyapeeth (Keral) Jagathy, Thiruvananthapuram-14 Mob : 9446662694

I, Dr.V.V.Viswam, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

(Sd)
Dr.V.V.Viswam
(Signature of Publisher)

Printed, Published and owned by Dr.V.V.Viswam on behalf of Hindi Vidyapeeth (Keral) Thiruvananthapuram - 14 and printed at Sarath Printers, Kalady, Thiruvananthapuram, Editor : Dr.M.S.Vinayachandran
हिन्दी विद्यापीठ (केरल), जगति, तिरुवनन्तपुरम - 14 की ओर से डॉ.[illegible] प्रिंटर्स, कालडी, तिरुवनन्तपुरम में मुद्रित, प्रकाशित एवं संचालित। संपादक डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant